हरियाणा राज्य में विद्यालयी नेतृत्व की सर्वोत्तम प्रथाओं का प्रलेखन

Documentation of best practices of School Leadership in Haryana State

व्यक्तिगत अध्ययन हस्त पुस्तिका

Case Studies Booklet

विद्यालय नेतृत्व अकादमी

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा

गुरुग्राम – 122001

School Leadership Academy

***State Council of Educational Research & Training, Haryana,* Gurugram-122001**

सत्र–2020–21

प्ररेणास्रोत :

डॉ. महावीर सिंह, अतिरिक्त मुख्य सचिव, विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

मार्गदर्शन :

डॉ. ऋषि गोयल, निदेशक, रा.शै.अनु. एवं प्रशि परिषद्, हरियाणा, गुरुग्राम

श्रीमती संगीता यादव, संयुक्त निदेशक, रा.शै.अनु. एवं प्रशि परिषद्, हरियाणा, गुरुग्राम

परामर्श :

श्री सुनील बजाज, उपनिदेशक, रा.शै.अनु. एवं प्रशि परिषद्, हरियाणा, गुरुग्राम

श्रीमती अंशु सिंगला, विभागाध्यक्ष अध्यापक शिक्षा, रा.शै.अनु. एवं प्रशि परिषद्, हरियाणा, गुरुग्राम

श्रीमती तनु भारद्वाज, विषय विशेषज्ञ (हिन्दी), रा.शै.अनु. एवं प्रशि परिषद्, हरियाणा, गुरुग्राम

सम्पादन व संयोजन :

डॉ. अश्विनी वशिष्ठ, समन्वयक, विद्यालयी नेतृत्व एकादमी, रा.शै.अनु. एवं प्रशि परिषद्, हरियाणा, गुरुग्राम

डॉ. रजनी कुमारी, परामर्शदाता, विद्यालयी नेतृत्व एकादमी, रा.शै.अनु. एवं प्रशि परिषद्, हरियाणा, गुरुग्राम

लेखन समिति :

संबंधित प्राचार्य/मुख्याध्यापक

सहायक :

श्री हरीश कुमार, डाटा एंट्री ऑपरेटर, रा.शै.अनु. एवं प्रशि परिषद्, हरियाणा, गुरुग्राम

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्
हरियाणा, गुरुग्राम – 122001

डॉ. ऋषि गोयल
निदेशक

आमुख

वर्तमान युग प्रत्येक क्षेत्र में नवाचार और परिवर्तन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखने तथा नवाचारी क्रियाओं के माध्यम से रूपांतरण को जन्म देने का युग है। रूपांतरण की चुनौती से निपटने के लिए आज संचालन क्षमता से अधिक नेतृत्व क्षमता का निर्माण व विकास महत्त्वपूर्ण हो गया है। शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के रूपांतरण का उद्देश्य भी कक्षाओं की प्रक्रिया को बाल केन्द्रित बनाकर बच्चों की विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करना है। विद्यालय मुखिया विद्यालयों में सकारात्मक परिवर्तन एवं विकास लाने में प्रमुख भूमिका का निवर्हन करते हैं। प्रभावी नेतृत्व के प्रदर्शन के लिए एक नेतृत्वकर्ता को सदैव स्वयं सीखने के लिए तैयार रहना चाहिए। क्रियात्मक चिंतन द्वारा विद्यालय प्रमुख इच्छित परिवर्तन लाने के लिए सभी चुनौतियों का सामना सकारात्मक भाव से कर सकते हैं। नेतृत्वकर्ता होने के नाते विद्यालय प्रमुखों से यह अपेक्षा रहती है कि वे अच्छे अभ्यास का आदर्श प्रस्तुत करें तथा कार्यों के निष्पादन का उचित प्रबंधन करें।

प्रस्तुत हस्त पुस्तिका में विद्यालय मुखियाओं के संचालन और नेतृत्व संबंधी सर्वोत्तम प्रथाओं का संकलन किया गया है। इसका उद्देश्य हरियाणा राज्य के सरकारी विद्यालयों में नेतृत्व कौशल के माध्यम से विद्यालय विकास तथा रूपांतरण की प्रक्रिया को प्राथमिकता देते हुए बढ़ावा देना है।

विद्यालय मुखिया विद्यालय समुदाय एवं बालकों के हित व आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए जो जोखिम उठाते हैं उन्हें भी इस पुस्तिका में दर्शाया गया है। समय प्रबंधन व संबंधों की विश्वसनीयता, अध्यापकों का प्रशिक्षण व पथ–प्रदर्शन संबंधी विभिन्न अनुभव इस पुस्तिका का हिस्सा है।

मुझे आशा है कि यह हस्त पुस्तिका विद्यालय मुखियाओं की नेतृत्व क्षमताओं का संवर्धन करने के साथ–साथ नवाचारों को बल प्रदान करने में सक्षम सिद्ध होगी।

विषय–सूची

क्र.सं.	विद्यालय का नाम	मुख्याध्यापक / प्राचार्य	पृष्ठ संख्या
1	राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नलवा (1304) हिसार–1		5–15
2	राजकीय प्राथमिक पाठशाला ढ़ाणी साढ़राणा जिला : गुरुग्राम	श्रीमती चम्पा रानी	16–18
3	राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पुनहानाए जिला : नूहँ	श्री जितेन्द्र सिंह	19–23
4	राजकीय उच्च विद्यालय लोहाखेडा (3301) जिला : फतेहाबाद	श्रीमती कुसुम	24–25
5	राजकीय उच्च विद्यालय गोहरा जिला : कैथल	श्री श्याम लाल	26–28
6	राजकीय उच्च विद्यालय लालूपुरा, ब्लॉक घरौंडा जिला : करनाल	श्रीमती कृष्णा कुमारी	29–32
7	राजकीय उच्च विद्यालय सोतई, बल्लभगढ़ जिला : फरीदाबाद	श्रीमती अरुणा कुमारी	33–35
8	राजकीय उच्च विद्यालय राई जिला : सोनीपत	श्रीमती पुष्पा मान	36–39
9	राजकीय उच्च विद्यालय, घरोरा जिला : फरीदाबाद	श्रीमती अंजु रानी	40–41
10	राजकीय कन्या उच्च विद्यालय अबूबशहर जिला : सिरसा	श्रीमती उषा किरण	42–44
11	राजकीय कन्या उच्च विद्यालय हाब्डी जिला : कैथल	श्री हरीशचन्द	45–46
12	राजकीय उच्च विद्यालय ढाणी, रायपुर जिला : हिसार	श्री रामनिवास	47–50
13	राजकीय उच्च विद्यालय बोहर जिला : रोहतक	श्रीमती वीना	51–52
14	राजकीय उच्च विद्यालय कनौह जिला : हिसार	श्री रामप्रसाद	53–54
15	राजकीय उच्च विद्यालय कम्बोपुरा जिला : करनाल	श्रीमती सुनीता शर्मा	55–56
16	GHS Chhapra Bibipur (3917) District – Mahendergarh	Smt. Santosh Devi	57-58
17	GHS Ruan (2436) District – Kurukshetra	Smt. Gursharan Jit Kaur	59-61
18	Aarohi Model Senior Secondary School, Songri District – Kaithal	Smt. Sunita Ahuja	62-64
19	**Gmsss, near bus stand Kalanaur** **District – Rohtak**	**Smt. Sunita**	65-66

राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नलवा (**1304**) हिसार–1

राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, नलवा की गणना हिसार जिले के श्रेष्ठ राजकीय विद्यालयों में की जाती है। गत कुछ वर्षों से यह विद्यालय निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। विद्यालय मुखिया के कुशल प्रबन्धन व उचित मार्गदर्शन, अनुभवी, योग्य एवं परिश्रमी शिक्षकों की विद्यालय के विकास के प्रति कटिबद्धता, अनुशासित व संस्कारित विद्यार्थियों की अपने लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता, विद्यालय प्रबन्धन समिति की सक्रिय सहभागिता व सहयोगात्मक रवैये एवं समुदाय की अपेक्षाओं पर खरे उतरकर उनसे मिल रहे अकल्पनीय सहयोग के कारण यह विद्यालय प्रति वर्ष अपनी उपलब्धियों में वृद्धि कर रहा है। वर्तमान में इस विद्यालय में कक्षा 6 से 12 तक 600 से अधिक विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। विद्यार्थियों की निरंतर बढ़ती संख्या के कारण यहाँ कला, वाणिज्य व विज्ञान (मेडिकल, नॉन मेडिकल) तीनों संकाय उपलब्ध हैं। ग्रामीण आँचल में स्थित इस विद्यालय में वे तमाम सुविधाएँ उपलब्ध हैं जिनकी अपेक्षा एक आदर्श विद्यालय में की जाती है। इस वर्ष हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा जिन विद्यालयों का मॉडल संस्कृति विद्यालय हेतु चयन किया गया है, उस सूची में इस विद्यालय का नाम होना भी एक बड़ी उपलब्धि है और गाँव नलवा के बच्चों के लिए यह किसी सौगात से कम नहीं है।

भवन व स्थिति

सभी प्रकार की सुविधाओं से युक्त भव्य, सुरक्षित व शांतमयी विद्यालय भवन, हरे–भरे पार्कों से सुसज्जित विद्यालय प्रांगण, डिजिटल बोर्ड युक्त भौतिकी, रसायन व जीव विज्ञान प्रयोगशालाएं, लड़कियों के लिए सिलाई–कढ़ाई केंद्र, सभी प्रकार के वाद्य–यंत्रों से युक्त सुसज्जित संगीत कक्ष, लड़कों–लड़कियों के लिए अलग–अलग कंप्यूटर लैब, दो स्मार्ट कक्षा–कक्ष, नव–निर्मित ब्यूटी एंड वैलनेस लैब, ऑटोमोबाइल लैब, असंख्य ज्ञानवर्धक पुस्तकों से युक्त पुस्तकालय, विशाल सभागार, निर्बाधित बिजली आपूर्ति के लिए हॉट लाइन कनेक्शन, इन्वर्टर, जनरेटर सुविधा, स्टाफ रूम में फ्रिज, माइक्रोवेव ओवन सुविधा, विद्यार्थियों के लिए R.O. युक्त पेयजल, भव्य प्राचार्य कक्ष जैसी सुविधाएँ इस विद्यालय को विलक्षणता प्रदान करती हैं। यद्यपि सत्र 2013–14 से पूर्व इस विद्यालय की झोली में कोई उल्लेखनीय उपलब्धि नहीं थी। ऊपर वर्णित कायाकल्प सत्र 2013–14 से होना आरम्भ हुआ।

निर्णायक पल/परिवर्तन का दौर

सत्र **2013–14**

मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानता हूँ कि दिनांक 03-07-2013 को बतौर मौलिक मुख्याध्यापक मेरी नियुक्ति इस विद्यालय में हुई। श्री प्रदीप नरवाल विद्यालय प्राचार्य पद को सुशोभित कर रहे थे। मुझे इस विद्यालय में प्रबल सम्भावनाएं नजर आईं कि यदि अतिरिक्त सार्थक प्रयास किये जायें तो निश्चित रूप से विद्यालय की सुन्दरता में वृद्धि होगी। प्राचार्य महोदय की सहर्ष अनुमति के पश्चात इस मिशन पर सभी के सहयोग से कार्य आरंभ किया गया। लगभग 5 माह के अथक प्रयास के पश्चात सुखद परिणाम सामने आया। हरियाणा शिक्षा विभाग

की मुख्यमंत्री विद्यालय सौन्द्रीयकरण योजना प्रतियोगिता में विद्यालय पहले खण्ड स्तर तत्पश्चात जिला स्तर पर अव्वल रहा। पुरस्कार में खण्ड स्तर पर 50000/– की राशि, प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिह्न व जिला स्तर पर एक लाख रूपये, प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिह्न भेंट किये गये। जिला प्रशासन द्वारा गणतन्त्र दिवस पर प्राचार्य महोदय को सम्मानित करते हुए यह पुरस्कार भेंट किया गया। पुरस्कार के साथ विद्यालय लौटने पर ग्राम पंचायत नलवा द्वारा विद्यालय मुखिया को पगड़ी पहनाकर सम्मानित किया गया। अधिकारियों द्वारा इस मिशन में अग्रणी भूमिका निभाने वाले विद्यार्थियों व शिक्षकों को सम्मानित किया गया। इसी कार्यक्रम में हमने सत्र 2014–15 के कक्षा तत्परता कार्यक्रम (CLASS READINESS PROGRAMME) में विद्यालय को स्वर्ण पदक दिलाना लक्ष्य रखा। इस उपलब्धि ने शिक्षकों व विद्यार्थियों में नई ऊर्जा व स्फूर्ति का संचार किया। इस उपलब्धि को एक उत्सव की तरह मनाया गया।

सत्र 2013–14 के दौरान कक्षा–8 के विद्यार्थियों को पहली बार NMMS (छात्रवृत्ति परीक्षा) की तैयारी भी करवाई गई जिसमें चार विद्यार्थी उत्तीर्ण हुए। मुख्यमंत्री विद्यालय सौन्द्रीयकरण योजना में जिला स्तर पर प्रथम पुरस्कार के अतिरिक्त निबंध लेखन प्रतियोगिता में भी विद्यालय की छात्रा जिला स्तरीय प्रतियोगिता में तृतीय स्थान पर रही। इस सत्र का कक्षा 6 से 8 का परीक्षा परिणाम कम्प्यूटरीकृत तैयार किया गया तथा कार्यालय का अधिकांश पत्राचार व अन्य कार्य कंप्यूटर द्वारा आरम्भ किया गया।

सत्र **2014–15**

अगले सत्र 2014–15 के दौरान कक्षा तत्परता कार्यक्रम (CLASS READINESS PROGRAMME) में विद्यालय ने न केवल स्वर्ण पदक प्राप्त किया अपितु मंडल स्तरीय एक दिवसीय कार्यशाला में विद्यालय की प्रस्तुति सर्वश्रेष्ठ रही। विद्यालय में आयोजित किये गये कक्षा तत्परता कार्यक्रम की विशेषता यह रही कि इस कार्यक्रम के दौरान विद्यालय के प्राचार्य महोदय से ले कर प्रत्येक प्राध्यापक, अध्यापक, सुख सहायक व प्रत्येक विद्यार्थी ने कार्यक्रम में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा के साथ–साथ व्यावहारिक ज्ञान देने के लिए उन्हें विभिन्न स्थलों का भ्रमण, कार्यशालाओं का आयोजन, समाज के प्रतिष्ठित, सफल व उच्च शिक्षित विभूतियों से रूबरू करवाया गया

जिन्होंने विद्यार्थियों के साथ अपने अनुभव सांझे किये व सफलता के सूत्र दिए। सभी शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों की प्रतिभा का सही आंकलन किया गया। ग्रामीण पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के लिए यह पहला सुखद अनुभव था। कार्यक्रम के अंतिम दिन माननीय जिला शिक्षा अधिकारी व खण्ड शिक्षा अधिकारी द्वारा विद्यालय में लगाई गई विभिन्न प्रदर्शनियों का शुभारम्भ किया गया व कार्यक्रम में विद्यालय की प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। इन प्रदर्शनियों को विद्यालय के विद्यार्थियों के अभिभावकों व ग्रामीणों ने भी देखा और सराहना की।

मंडल स्तरीय CRP कार्यशाला में माननीय ACS महोदय विद्यालय की प्रस्तुति की सराहना की व पिसम पर (Very impressive] keep it up) प्रतिक्रिया अंकित की। इस उपलब्धि से विद्यालय की प्रतिष्ठा में बहुत वृद्धि हुई। दो लगातार सत्रों में दो बड़ी उपलब्धियों में सफलता के पश्चात विद्यालय किसी परिचय का मोहताज नहीं था। सबसे अधिक खुशी इस बात की थी की गत वर्ष की उपलब्धि के पश्चात् इस सत्र के लिए CRP में स्वर्ण पदक का जो लक्ष्य निर्धारित किया था, उसे पूरा किया।

सत्र 2014–15 के सत्र के दौरान विद्यालय की कक्षा–8 के 11 विद्यार्थियों को अतिरिक्त कक्षाओं के परिणामस्वरूप NMMS (छात्रवृत्ति परीक्षा) में सफलता मिली। यह संख्या गत सत्र की संख्या से तीन गुना के लगभग थी व जिला हिसार में दूसरा बढ़िया प्रदर्शन था। इनके अतिरिक्त खण्ड स्तरीय सांस्कृतिक व खेल प्रतियोगिताओं में भी विद्यालय के विद्यार्थी विजयी रहे तथा जिला सत्र पर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई।

कक्षा तत्परता कार्यक्रम (CLASS READINESS PROGRAMME) के दौरान विद्यालय के पूर्व विद्यार्थियों व समुदाय के गणमान्य व्यक्तियों ने विद्यालय का दौराध्भ्रमण किया जिससे वे अत्यधिक प्रभावित हुए। हमारा प्रयास था कि विद्यालय की उपलब्धियों से प्रभावित हो कर समुदाय विद्यालय के विकास में भी अपना योगदान दे। गाँव नलवा के सफल व्यवसायी द्वारा पहले से विद्यालय की छात्राओं के लिए 'सिलाई–कढ़ाई केंद्र' व कंप्यूटर प्रयोगशाला की सुविधा दी हुई थी। विद्यालय दौरे के दौरान विद्यालय की उपलब्धियों से प्रभावित व पहले से चल रहे सिलाई–कढ़ाई केंद्र व कंप्यूटर प्रयोगशाला से प्रेरित हो कर सेवानिवृत अधीक्षण अभियंता ने विद्यालय में संगीत कक्ष बनाने में अपना योगदान दिया। जिसमें संगीत वाद्ययंत्रों पर एक लाख रूपये व संगीत कक्ष सज्जा पर 30 हजार रूपये खर्च किये व विद्यालय में संगीत अध्यापक का पद न होने के कारण संगीत अध्यापक का प्रबंध उन्होंने अपने स्तर पर किया। जिसके परिणामस्वरूप विद्यालय की छात्राओं ने खण्ड व जिला स्तरीय गायन व नृत्य प्रतियोगिताओं में विजयी प्रदर्शन किया। एक सफल व्यवसायी द्वारा विद्यालय में पढ़ने वाले 600 विद्यार्थियों के लिए R.O. का प्रबंध किया गया ताकि विद्यार्थियों को शुद्ध पेय जल उपलब्ध हो सके।

सत्र **2015–16**

गत दो सत्रों के दौरान दो बड़ी उपलब्धियों के लिए किये गए परिश्रम का पारितोषक सत्र 2015–16 के दौरान मिलना आरम्भ हुआ। विद्यार्थियों को समुदाय से संगीत कक्ष व R.O. की सुविधा प्राप्त होना इसी का परिणाम है। विद्यालय में सदनों की स्थापना से प्रत्येक गतिविधि में विद्यार्थियों की सहभागिता बढ़ी। विद्यार्थियों

में स्वच्छता के प्रति जागरूकता, दैनिक उपस्थिति के प्रति गम्भीरता देखने को मिली। अतिरिक्त कक्षाओं का आयोजन जारी रहा। सत्र के दौरान सह–शैक्षणिक गतिविधियों व प्रतियोगिताओं में सामान्य के साथ दिव्यांग विद्यार्थियों द्वारा सराहनीय प्रदर्शन किया गया। सत्र 2015–16 में आयोजित की गई NMMS छात्रवृत्ति परीक्षा में 7 विद्यार्थियों ने सफलता अर्जित की।

इस बार भी विद्यालय का प्रदर्शन जिले के शीर्ष अग्रणी विद्यालयों में था। गत तीन सत्रों से आयोजित की जा रही प्रत्येक शिक्षक–अभिभावक बैठक में अभिभावकों की सहभागिता व उपस्थिति 80% से अधिक थी। प्रत्येक बैठक में अभिभावकों को उनके बच्चे द्वारा प्रत्येक परीक्षा व कक्षा में प्रदर्शन का गहनता से आंकलन करके अवगत करवाया जाता। कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों का कंप्यूटरीकृत परीक्षा परिणाम प्रत्येक विषय अध्यापक को एक स्मार्ट फोल्डर में तैयार करके दिया जाता जिससे विद्यार्थियों के प्रदर्शन में सुधार देखने को मिला। इसी प्रदर्शन के आधार पर कमजोर व मेधावी बच्चों के लिए अतिरिक्त कक्षाएं आयोजित की जातीं। इस वर्ष पुनः CRP में विद्यालय ने न केवल स्वयं बढ़िया प्रदर्शन किया अपितु नलवा क्लस्टर के अन्य विद्यालयों ने भी मार्गदर्शन व प्रेरणा से उम्दा प्रदर्शन किया। नलवा क्लस्टर के अंतर्गत एक विद्यालय ने मुख्यमंत्री विद्यालय सौन्द्रीयकरण योजना प्रतियोगिता में खण्ड स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया । विद्यालय के शिक्षकों को जिला प्रशासन व समाजसेवी संस्थाओं द्वारा सम्मानित भी किया गया। समुदाय के गणमान्य व्यक्तियों की सहभागिता में सक्रियता बढ़ी।

विद्यालय को विशिष्ट पहचान भी मिली लेकिन विद्यालय की कमजोर कड़ी बोर्ड परीक्षा परिणाम में स्तरहीन प्रदर्शन था।

यद्यपि आगामी सत्रों में गहन मंथन व अतिरिक्त प्रयास से इस कमी को दूर करने में विद्यालय को सफलता मिली।

यदि गत तीन व वर्तमान सत्र (2015–16) के वार्षिक बोर्ड परीक्षा परिणाम पर दृष्टि डाली जाए तो आंकड़े निश्चित रूप से उत्साहजनक नहीं हैं। छात्र संख्या तो अधिक थी परन्तु बोर्ड परीक्षा परिणाम में संतोषजनक प्रदर्शन एक चुनौती अवश्य थी। सत्र 2012–13 से कक्षा 10 व 12 के बोर्ड परीक्षा–परिणामों की तुलनात्मक सारणी

सत्र	कक्षा	विद्यालय परिणाम	बोर्ड परिणाम	विद्यालय टॉपर	कक्षा	विद्यालय परिणाम	बोर्ड परिणाम	विद्यालय टॉपर
2012–13	10	23-16%	50-79%	83-00%	12	42-07%	59-03%	84-20%
2013–14	10	43-22%	60-88%	81-17%	12	67-48%	72-91%	85-80%
2014–15	10	29-07%	45-84%	78-80%	12	64-63%	53-71%	90-68%
2015–16	10	34-40%	48-88%	83-20%	12	39-83%	62-40%	81-40%

विद्यालय की छवि प्रतिष्ठा अनुरूप बनाये रखने के लिए बोर्ड परीक्षा परिणामों में सुधार की अत्यंत आवश्यकता थी। यद्यपि सत्र दर सत्र सुधार हो रहा था लेकिन शिक्षकों द्वारा किये जा रहे प्रयासों का अपेक्षित परिणाम नहीं मिल रहा था। इसे चुनौती मानते हुए प्रयास जारी रखे गए।

सत्र **2016–17**

इस सत्र के आरंभ में मुख्य लक्ष्य बोर्ड परीक्षा परिणाम में विद्यालय की प्रतिष्ठा के अनुरूप प्रदर्शन रखा गया। इस सत्र के दौरान हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा विद्यार्थियों के सर्वांगींण विकास के लिए विद्यालयों में प्रत्येक शनिवार को JOYFUL SATURDAY के रूप में मनाने के आदेश पारित किये गए। इस विद्यालय ने इन आदेशों की अक्षरशः अनुपालना करते हुए इस दिशा में उम्दा परिणाम दिए व माननीय अधिकारीगण द्वारा आयोजित प्राचार्य महोदयों की बैठकों में इस विद्यालय की उदहारण दी जाती। विद्यार्थी शनिवार की उत्सुकता से प्रतीक्षा करते।

शैक्षणिक व सहशैक्षणिक गतिविधियों में विद्यार्थी बढ़–चढ़ कर भाग लेते। विद्यालय की प्रतिष्ठा में दिन प्रतिदिन वृद्धि हो रही थी।

सत्र 2016–17 में आयोजित की गई NMMS छात्रवृत्ति परीक्षा में भी 7 विद्यार्थियों ने सफलता अर्जित की। यह आंकड़ा सराहनीय था।

जिला स्तरीय गीता जयंती प्रतियोगिता में विद्यालय की टीम ने चार विधाओं में खण्ड में प्रथम व दो विधाओं में जिले में प्रथम पुरस्कार प्राप्त करके ग्यारह हजार रूपये के नकद पुरस्कार प्राप्त विद्यालय की प्रतिष्ठा में वृद्धि की।

इस सत्र से कक्षा 6 से 8 के विद्यार्थियों को दो वैकल्पिक विषय पढ़ने का विकल्प दिया गया। संस्कृत व पंजाबी विषय का विकल्प और ड्राइंग व गृह विज्ञान विषय पढ़ने का विकल्प दिया गया। गृह विज्ञान विषय का विकल्प केवल लड़कियों के लिए था। विद्यार्थियों ने दोनों नये विषयों में रुचि दिखाई।

इस सत्र के दौरान भी खण्ड व जिला सत्र पर आयोजित खेल व सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों द्वारा विजयी प्रदर्शन किया गया। सत्र के दौरान सर्दी के मौसम में समाजसेवी संस्थाओं द्वारा विद्यालय में आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों में स्वेटर वितरित की गईं।

इस सत्र के दौरान देश में प्रतिष्ठित व समाज सेवा में अग्रणी संस्था के संस्थापक श्री सीता राम जिंदल जी ने इस विद्यालय से कक्षा 12 की बोर्ड परीक्षा में विद्यालय टॉपर को स्वर्ण पदक से सम्मानित करने की घोषणा की। यह सचमुच विद्यालय के मेधावी विद्यार्थियों के लिए स्वर्णिम अवसर व विद्यालय के लिए गौरवमयी पल थे।

सत्र **2016–17** का वार्षिक बोर्ड परीक्षा परिणाम

सत्र	कक्षा	विद्यालय परिणाम	बोर्ड परिणाम	विद्यालय टॉपर	कक्षा	विद्यालय परिणाम	बोर्ड परिणाम	विद्यालय टॉपर

2016–17	10	91-54%	50-49%	87-20%	12	80-95%	64-53%	89-60%

सत्र 2016–17 का बोर्ड परीक्षा–परिणाम सराहनीय रहा। गत वर्षों के दौरान उतार–चढ़ाव से हताश न हो कर साकारात्मक सोच के साथ शिक्षकों द्वारा किये जा रहे प्रयास रंग लाये। कक्षा 12 के छात्र को श्री सीता राम जिंदल फाउंडेशन द्वारा स्वर्ण पदक से नवाजा गया जिससे अन्य बच्चों को भी प्रेरणा मिली। विद्यालय निरंतर आगे बढ़ने के लिए लालायित था और अपेक्षित सफलता मिलने से शिक्षकों व विद्यार्थियों में खुशी की लहर थी।

सत्र **2017–18** से **2019–20**

सत्र 2017–18 के मध्य में सामान्य तबादलों के कारण विद्यालय प्राचार्य का स्थानान्तरण हो गया व उनके स्थान पर प्राचार्या श्रीमती सुनीता रानी जी ने कार्यभार संभाला। उन्होंने पूर्व प्राचार्य के अधूरे कार्यों को पूरा करने का संकल्प लेते हुए अपने लंबे शैक्षणिक अनुभव, कार्यशैली में पारदर्शिता, दूरदर्शिता, कुशल प्रबन्धन व मिलनसार स्वभाव से विद्यालय व विद्यार्थियों के हित में अनेक निर्णय लिए। उन्होंने कार्यभार गृहण करने के कुछ दिन पश्चात विद्यालय प्रबन्धन समिति व अभिभावकों की संयुक्त बैठक बुलाई व उनसे विद्यालय के विकास में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने की अपील की। विद्यालय हित में उनके सुझावों को सहर्ष स्वीकार किया गया।

विद्यालय को सुचारू रूप से चलाने के लिए उन्होंने व्यवस्था का जायजा लिया तथा निम्नलिखित सुधार कार्य प्राथमिकता के आधार पर करवाए गए।

कंप्यूटर प्रयोगशाला में खराब पड़े कंप्यूटरों, प्रिंटर, जनरेटर व अन्य आवश्यक उपकरणों को ठीक करवाया।

विद्यालय के पार्कों को आकर्षक व हर–भरा बनाने के लिए अपने स्तर पर माली का प्रबंध करके फूलदार, हर्बल व अन्य उपयोगी पौधे लगवाए गए व इनकी देखभाल का दायित्व कक्षा इन्चार्जों के मार्गदर्शन में वरिष्ठ कक्षाओं को सौंपा गया। इससे विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्धा की भावना देखने को मिली। कुछ दिनों के परिश्रम के पश्चात विद्यालय प्रांगण भव्य लगने लगा।

MDM में सरकार द्वारा जारी किये गए मीनू से बच्चों की पसंद के व्यंजन बनाने के आदेश दिए ताकि प्रत्येक बच्चे को MDM रुचिकर लगे। डक्ड में दुग्ध वितरण के लिए मशीन तैयार करवाई गई ताकि दूध अधिक समय तक गर्म रहे व सहजता से वितरित किया जा सके।

अभिभावकों व SMC से अनुमति ले कर बच्चों की पसंद की वर्दी लागू की गई जिससे बच्चे अधिक आकर्षक लगने लगे। बच्चों को नयापन लगा व अभिभावकों ने भी सराहना की।

प्राचार्या महोदया विद्यालय की प्रत्येक गतिविधि में स्वयं रुचि लेने लगीं जिससे विद्यार्थियों और शिक्षकों को प्रेरणा मिलती। JOYFUL SATURDAY अधिक प्रभावशाली ढंग से मनाया जाने लगा।

अध्यापक अभिभावक बैठकों में प्राचार्या महोदया द्वारा अभिभावकों को स्वयं संबोधित किया जाता जिससे इन बैठकों में अभिभावकों की संख्या बैठक दर बैठक बढने लगी और यह संख्या 90% से अधिक रहती। विद्यालय प्रबन्धन समिति के सदस्य भी अधिक सक्रिय होने लगे व वे समय–समय पर अभिभावकों को प्रेरित करते।

विद्यालय में प्रत्येक आयोजन मात्र औपचारिकता पूरी करने के लिए नहीं अपितु अच्छे ढंग से मनाया जाने लगा ताकि विद्यार्थी उनकी उपयोगिता समझें। इन आयोजनों में SMC सदस्यों की उपस्थिति सुनिश्चित की जाती। विद्यालय में राष्ट्रीय दिवस (गणतन्त्र व स्वतन्त्रता दिवस) एक उत्सव की तरह मनाये जाने की परम्परा का आगाज हुआ। जिसमें अधिक से अधिक ग्रामीण व अभिभावक सम्मिलित होने लगे। प्रतिक्रिया यहाँ तक मिलने लगी कि इन आयोजनों को देखने के लिए जितनी भीड़ उमड़ती है इतनी तो शायद किसी रैली में भी नहीं मिलेगी। यद्यपि पहले आयोजन के समय सभी एकमत नहीं थे कि ग्रामीण परिवेश में इतना बड़ा आयोजन और इतने खर्च का औचित्य नहीं बनता। प्राचार्या महोदया ने आयोजन के लिए साहसिक निर्णय लेते हुए SMC व शिक्षकों के सहयोग से इसे सफल बनाया और फिर यह परंपरा बं गई। इन आयोजनों में कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थी भाग लेते। मंच पर विद्यार्थियों की भव्य प्रस्तुतियां देखकर उनके अभिभावक गदगद हो उठते तथा अभिभावक व अतिथिगण बच्चों की हौंसला अफजाई इनाम दे कर करते। इन आयोजनों के दौरान बतौर अतिथि शिरकत करना भी सम्मान से कम नहीं था जिसके लिए समुदाय के गणमान्य व्यक्ति स्वयं इच्छा प्रकट करते। इन आयोजनों के दौरान अतिथिगण के सम्मान का पूरा ध्यान रखा जाता ताकि समुदाय के अधिक से अधिक व्यक्ति विद्यालय विकास रुपी यज्ञ में अपनी पावन आहूति डालें। ग्रामीण पृष्ठभूमि के बच्चों की देशभक्ति के भावों से ओतप्रोत व सामाजिक बुराइयों के प्रति जागरूकता वाली प्रस्तुतियां देखकर ग्रामीण बहुत प्रशंसा करते क्योंकि उन्हें गाँव में इस प्रकार के आयोजन देखने का अवसर नहीं मिलता था। विद्यार्थियों को मंच मिलने से उनमें छिपी प्रतिभा का विकास हुआ। इन आयोजनों दौरान विद्यालय की NCC, NSS व ECO CLUB टीमों द्वारा कुशल प्रबंधन व अनुशासन की सभी सराहना करते। इन आयोजनों को सफल बनाने के लिए प्रत्येक शिक्षक अपना दायित्व बखूबी निभाता। विद्यालय के साथ समुदाय की सक्रियता से विद्यार्थियों को लाभ पहुँचने लगा। आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों के साथ–साथ मेधावी विद्यार्थी भी लाभान्वित होने लगे।

विद्यालय में आरंभ किये गए दो नये वैकल्पिक विषयों पंजाबी व गृहविज्ञान में भी अधिक से अधिक बच्चों ने रुचि दिखाई। विद्यार्थियों ने पंजाबी विषय को 12 वीं तक जारी रखने की इच्छा व्यक्त की। मार्च, 2019 की बोर्ड परीक्षा में विद्यालय के 8 बच्चों ने पंजाबी वैकल्पिक विषय की परीक्षा दी जिनमें से 7 बच्चों ने 90 से अधिक अंक अर्जित किये व एक विद्यार्थी ने 75 अंक प्राप्त किये। इन विद्यार्थियों में 97 अंक सर्वाधिक रहे। इतना ही नहीं हरियाणा शिक्षा बोर्ड द्वारा पंजाबी, संस्कृत व उर्दू भाषाओँ के प्रचार व प्रसार के लिए जिलावार विषय विशेष व कुल प्राप्त अंकों के आधार पर छात्रवृत्ति हेतु चयन किया जाता है। सत्र 2018–19 के दौरान बोर्ड द्वारा हिसार जिले से पंजाबी विषय ए लिए 7 विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति के लिए चयन किया गया जिनमें से 4 विद्यार्थी उकलाना के प्राइवेट विद्यालयों के थे। उकलाना पंजाबी बाहुल्य आबादी वाला क्षेत्र है। शेष 3 विद्यार्थी इस विद्यालय के थे जो राजकीय विद्यालय के विद्यार्थी थे व ऐसे क्षेत्र से थे जहाँ पंजाबी का प्रचलन नहीं था। इस

उपलब्धि के लिए इन बच्चों को प्राचार्या महोदया, विषय अध्यापक व SMC द्वारा सम्मानित किया गया।
प्रार्थना सभा के दौरान प्रतिदिन बच्चों के लिए ज्ञानवर्धक गतिविधियाँ करवाई जाने लगीं जिसका प्रत्यक्ष लाभ बच्चों को मिलने लगा। गीता जयंती प्रतियोगिता में विद्यालय की कनिष्ठ वर्ग की टीम जिला स्तरीय

प्रतियोगिता में तृतीय स्थान पर रही व ग्यारह हजार रूपये का नकद पुरस्कार प्राप्त किया।
NMMS परीक्षा में भी प्रत्येक सत्र में विद्यार्थी सफल रहते। कक्षा 8 में NMMS परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले विद्यार्थी को 12 वीं कक्षा उत्तीर्ण करने तक प्रति माह 1000 : पये की दर से छात्रवृत्ति मिलने लगी। प्रवेश उत्सव पर इन विद्यार्थियों के साथ बोर्ड परीक्षा टॉपर व अन्य प्रतिस्पर्धाओं में विजेता विद्यार्थियों को फूल माला डालकर गाँव में रैली निकाली जाती जिससे अधिक से अधिक बच्चों को प्रेरणा मिले।
सत्र 2018–19 के दौरान हरियाणा शिक्षा विभाग द्वारा SCHOOL TWINNING PROGRAMME चलाया गया जिसके अंतर्गत प्रत्येक राजकीय विद्यालय का प्राइवेट विद्यालय के साथ जोड़ा बनाया गया ताकि विद्यार्थी एक दूसरे के विद्यालय का भ्रमण करें व कुछ नया सीखें। इस कार्यक्रम के अंत में प्रत्येक विद्यालय को अपने अनुभवों की रिपोर्ट बनाकर जिला प्रशासन के पास जमा करवानी थी व प्रथम तीन प्रस्तुतियों को पुरस्कृत किया जाना था। विद्यालय ने इस अवसर को अच्छे से भुनाया। अपने जोड़ीदार हिसार शहर के प्रतिष्ठित सेंट कबीर विद्यालय के विद्यार्थियों का गर्मजोशी से अभिनन्दन किया। विद्यालय का दौरा करने के पश्चात SMC के सहयोग से उन्होंने गाँव नलवा व आसपास खेतों व खानक के पहाड़ों व तोशाम का भ्रमण किया। खानक के पहाड़ों में चल रही खनन प्रक्रिया को देखा। खानक की बजरी व क्रेशर बहुत प्रसिद्ध हैं। गाँव में भ्रमण के दौरान ग्रामीणों ने उन्हें बहुत सी प्राचीन वस्तुएं दिखाईं व पौष्टिक व्यंजन परोसे गए। अपने विद्यार्थियों से प्रतिपुष्टि मिलने के पश्चात प्रभावित हो कर सेंट कबीर विद्यालय की निदेशिका ने उप–प्राचार्या व विद्यार्थियों के साथ समापन दिवस पर स्वयं विद्यालय व गाँव का भ्रमण किया। उन्होंने विद्यालय में चल रहे शिक्षण कार्य व अन्य गतिविधियों की प्रशंसा की। जब नलवा विद्यालय के विद्यार्थियों ने सेंट कबीर विद्यालय का भ्रमण किया तो निदेशिका महोदया ने स्वयं उनका अभिवादन किया व अपने विद्यालय के विद्यार्थियों व शिक्षकों से रूबरू करवाया। जब इस कार्यक्रम की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई तो सेंट कबीर विद्यालय की प्रस्तुति हिसार जिले में सर्वश्रेष्ठ रही जिसका श्रेय उन्होंने नलवा विद्यालय को दिया। उस दिन से दोनों विद्यालयों में अटूट रिश्ता बन गया। सेंट कबीर विद्यालय की निदेशिका ने अपने पिता की पूण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम में नलवा विद्यालय के विद्यार्थियों व शिक्षकों को सम्मानित किया व नलवा विद्यालय के लिए दो कंप्यूटर व पुस्तकालय के लिए हजारों रूपये की पुस्तकें भेंट की व भविष्य में भी इस सहयोग को जारी रखने का वचन दिया। जिला शिक्षा अधिकारी महोदय इस की प्रशंसा करते व नलवा विद्यालय की मिसाल अन्य विद्यालयों को देते।
विद्यालय के विद्यार्थी प्रत्येक क्षेत्र में बढ़िया प्रदर्शन कर रहे थे। इसमें निरन्तरता बनाये रखनी अत्यंत आवश्यक थी। श्री सीता राम जिंदल फाउंडेशन द्वारा 12वीं कक्षा के विद्यालय टॉपर को स्वर्ण पदक दे कर सम्मानित किया जाता था। यदि विद्यालय का परिणाम बोर्ड परिणाम से निम्न रह जाता तो इससे विद्यालय की छवि

धूमिल होती। अतः यह निश्चय किया गया कि गत सत्र के परिणाम से प्रेरणा ले कर अधिक परिश्रम किया जायेगा।

श्री सीता राम जिंदल फाउंडेशन से प्रेरित हो कर विद्यालय के मौलिक मुख्याध्यापक ने विद्यार्थियों के प्रदर्शन में निरन्तरता व प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा करने के उद्देश्य से कक्षा 6 से 12 के विद्यार्थियों के लिए प्रत्येक मासिक, अर्धवार्षिक व वार्षिक परीक्षा में अपने सेक्शन में अव्वल रहने वाले विद्यार्थी को अपने माता–पिता की स्मृति में पुरस्कृत करने की इच्छा व्यक्त की। इस के साथ नये वैकल्पिक विषय पंजाबी के प्रचार व प्रसार के लिए इस विषय को पढ़ रहे विद्यार्थियों में प्रत्येक सेक्शन में अव्वल रहने पर पुरस्कृत करने की इच्छा व्यक्त की। प्राचार्या महोदया व सहयोगी शिक्षकों ने इसकी सराहना करते हुए अनुमति प्रदान की। यद्यपि बाजार में मिलने वाला यह सामान्य मैडल श्री सीता राम जिंदल फाउंडेशन द्वारा नवाजे जा रहे स्वर्ण पदक की तुलना में बहुत तुच्छ था परन्तु विद्यार्थियों व सहयोगी शिक्षकों को प्रेरित करने के लिए पर्याप्त था। इसका परिणाम भी शीघ्र देखने को मिला। आरंभ में 20 सेक्शनों में प्रत्येक सेक्शन में एक ही विद्यार्थी अव्वल रहता लेकिन धीरे–धीरे यह संख्या बढने लगी। कुल प्राप्त अंकों के आधार पर भी और पंजाबी विषय में भी अव्वल रहने वाले विद्यार्थी प्रोत्साहित हो कर बढ़िया प्रदर्शन करने लगे। सत्र दर सत्र विद्यालय के बोर्ड परिणाम व टॉपर के अंक प्रतिशत में वृद्धि होने लगी। नॉन बोर्ड कक्षाओं के विद्यार्थी भी बढ़िया प्रदर्शन करने लगे। पूरे सत्र के दौरान विद्यार्थियों में गम्भीरता देखने को मिलती। श्री सीता राम जिंदल फाउंडेशन ने इस प्रयास के लिए प्रेरणास्रोत का काम किया।

सत्र **2017–18** से सत्र **2019–20** का वार्षिक बोर्ड परीक्षा परिणाम

सत्र	कक्षा	विद्यालय परिणाम	बोर्ड परिणाम	विद्यालय टॉपर	कक्षा	विद्यालय परिणाम	बोर्ड परिणाम	विद्यालय टॉपर
2017–18	10	71-59%	51-15%	86-60%	12	79-81%	63-84%	92-20%
2018–19	10	64-63%	57-39%	90-40%	12	97-97%	64-46%	93-40%
2019–20	10	77-01%	59-74%	90-00%	12	96-33%	80-34%	97-20%

उपरोक्त परीक्षा–परिणाम विद्यार्थियों व शिक्षकों के परिश्रम को स्वयं बयान कर रहे हैं। केवल बोर्ड परीक्षा–परिणामों में ही निरंतरता व सुधार देखने को मिला अपितु प्रत्येक क्षेत्र में इस विद्यालय के विद्यार्थियों ने परचम लहराया। सत्र 2018–19 के दौरान हरियाणा सरकार द्वारा राजकीय विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए चलाई जा रही सुपर 100 योजना में इस विद्यालय के 3 विद्यार्थियों का चयन हुआ।

सत्र 2017–18 में प्राचार्या महोदया के कार्यभार संभालने के कुछ दिन पश्चात स्वयं श्री सीता राम जिंदल जी का नलवा में आगमन हुआ व इस दौरान विद्यालय प्राचार्या महोदया को उनसे भेंट करने का स्वर्णिम अवसर मिला। उन्होंने विद्यालय के विकास हेतु कुछ मांगे रखीं व सुविधाएँ उपलब्ध करवाने हेतु निवेदन किया। श्री सीता राम जी ने उन्हें शीघ्र ही पूरा करने के लिए अपने प्रबंधकों को आदेशित किया। कुछ दिन पश्चात ही विद्यालय को ट्रस्ट द्वारा बड़ी SMART LED भेंट की गई जिसका विद्यालय द्वारा भरपूर उपयोग किया गया। इस SMART LED के माध्यम से पाठ्यक्रम आधारित PPT व शिक्षण सामग्री तैयार करके बच्चों को पढ़ाया जाने लगा। बच्चों के लिए यह न्य अनुभव था। शिक्षण की इस नई तकनीक से बच्चों ने वांछित परिणाम दिए

क्योंकि शिक्षण की नई विधि उन्हें अधिक रुचिकर लगी। समय–समय पर विद्यालय निरीक्षण के लिए पधारने वाले अधिकारियों ने भी मुक्त कंठ से विद्यालय की सराहना की। इसका श्रेय प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से श्री सीता राम जिंदल फाउंडेशन को दिया जाना चाहिए। इसके पश्चात श्री सीता राम जिंदल फाउंडेशन द्वारा विद्यालय में निर्माण कार्य, नवीनीकरण, विद्यालय कार्यालय व पुस्कालय हेतु अलमारियों, पुस्तकों, बेंचों, स्मार्ट कक्षा कक्ष, टाट–पट्टी, खेल के सामान, बैटरियों, विद्यालय भवन के रंग–रोगन पर लाखों रूपये खर्च किये गए जो वर्तमान में भी जारी हैं। समुदाय से इतनी बड़ी सहायता मिलना सचमुच इस विद्यालय पर दैवीय कृपा से कम नहीं थी। इस सहायता से विद्यालय के साथ–साथ प्रत्येक विद्यार्थी भी लाभान्वित हुआ। विद्यालय का तो मानो कायाकल्प ही हो गया। वर्तमान सत्र के लिए श्री सीता राम जिंदल फाउंडेशन द्वारा 12वीं कक्षा के विद्यालय टॉपर के साथ 10वीं कक्षा के विद्यालय टॉपर को भी स्वर्ण पदक से सम्मानित करने की घोषणा की है। इनके अतिरिक्त आर्थिक रूप से पिछड़े मेधावी बच्चों के लिए भी लाभकारी योजना चलाई गई है। सत्र 2019–20 के लिए श्री सीता राम जिंदल फाउंडेशन द्वारा विद्यालय को 12वीं कक्षा के बोर्ड परिणाम के लिए 95-00% का लक्ष्य निर्धारित किया गया जिसे विद्यालय ने प्राप्त किया व 12वीं की विद्यालय टॉपर ने 97-20% अंक अर्जित करके नया कीर्तिमान स्थापित किया। सत्र 2019 के दौरान श्री सीता राम जिंदल जी ने स्वयं विद्यालय का दौरा किया व आयोजित सभा में विद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों व प्राचार्या महोदया के नेतृत्व की प्रशंसा की तथा विद्यालय प्राचार्या को विद्यालय के लिए हर संभव सहयोग देने का वचन दिया। इस उपलब्धि के लिए उन्होंने अपने प्रबंधकों से विद्यालय के सभी शिक्षकों को सम्मानित करने के निर्देश दिए। आदेशों की पालना करते हुए फाउंडेशन के अधिकारीयों द्वारा प्रत्येक शिक्षक को अनमोल भेंट के रूप में एक–एक घड़ी भेंट की गई। गाँव के दौरे के दौरान उन्होंने विद्यालय प्रबन्धन समिति के सदस्यों से भी बैठक की तथा उन्हें विद्यालय में अपनी सक्रियता बढ़ाने के लिए कहा तथा समय–समय पर विद्यालय में विद्यार्थियों के लिए किसी भी सुविधा की आवश्यकता हेतु फाउंडेशन को अवगत कराने के निर्देश दिए। अपने संदेश में उन्होंने कहा कि हमें विद्यालय से वांछित परिणाम चाहिएं ताकि यहाँ के विद्यार्थी आत्मनिर्भर बन कर समाज निर्माण में अपनी महती भूमिका निभाएं।

समाज में ऐसी मिसाल अन्यत्र कहीं नहीं मिलती जहाँ एक संस्था राष्ट्र के भावी कर्णधारों के स्वप्न साकार करने के लिए अपना अहम योगदान दे रही है। देखते ही देखते विद्यालय का कायाकल्प होने लगा था। विद्यालय में सुविधाओं का अंबार लग गया था। श्री सीता राम जिंदल फाउंडेशन की प्रशंसा में जितना लिखा जाए उतना कम।

सत्र 2019–20 के मध्य में हुए सामान्य तबादलों में इस विद्यालय के 75% शिक्षकों का स्थानांतरण हो गया। कोई भी ऐसा सदस्य नहीं था जिसके चेहरे पर मायूसी न हो क्योंकि सभी इस विद्यालय को शैशवावस्था से यौवन की दहलीज रखता देखने के साक्षी थे। अभी इस विद्यालय का सर्वश्रेठ दौर शेष था। यह विद्यालय दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करे, हिसार जिले की सीमाओं को लांघकर राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर अपना परचम लहराए, इस कामना व विश्वास के साथ सभी ने विद्यार्थियों व अपने स्थान पर कार्यभार ग्रहण करने वाले शिक्षकों को शुभकामनायें दे कर विदाई ली। कुछ समय पूर्व जब सभो पता चला कि इस विद्यालय का नाम संस्कृति मॉडल स्कूल सूची में है तो सभी को हार्दिक प्रसन्नता हुई।

गत 18-03-2021 को विद्यालय प्राचार्या श्रीमती सुनीता रानी जी का भी स्तानातरण हो गया जिनके कार्यकाल लगभग साढ़े तीन वर्ष की अल्पावधि में विद्यालय ने बुलंदियों को छुआ। समुदाय से अकल्पनीय सहयोग मिला और सबसे बड़ी उपलब्धि यह रही कि विद्यालय की झोली को उपलब्धियों से भरकर अभिभावकों व समुदाय की अपेक्षाओं पर खरे उतरे व उनके सहयोग को सही साबित किया।

..... धन्यवाद

विद्यालय का नाम : राजकीय प्राथमिक पाठशाला ढ़ाणी साढ़राणा

जिला : गुरुग्राम

मुख्याध्यापिका का नाम : श्रीमती चम्पा रानी

राजकीय प्राथमिक पाठशाला ढ़ाणी साढ़राणा गुरुग्राम जिले के गुरुग्राम ब्लॉक में गढ़ी क्लस्टर के अंतर्गत आता है। यह गढ़ी हरसरू रेलवे स्टेशन से करीब 2 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह ढ़ाणी साढ़राणा में स्थित है जोकि गाँव साढ़राणा की पंचायत के अधीन आती है। गाँव में कुल 60 से 100 घर है। जिनके बच्चे लगभग प्राइवेट स्कूलों में जाते हैं। आस–पास के 5 से 8 किलोमीटर के दायरे में कई कॉलोनियाँ बसी हुई है और यहाँ इन कॉलोनियों में बाहर से आकर बसे हुए लोग हैं। काफी तादाद में यहाँ प्रवासी मजदूर तबके के लोग रहते हैं। आर्थिक रूप यहाँ के लोगों का स्तर ज्यादा उच्च नहीं है। अधिकतर यहाँ निम्न वर्ग, माध्यम वर्ग या उच्च मध्यम वर्ग के लोग रहते हैं। ढ़ाणी गाँव में 'यादव' जाति के लोग अधिक है। धार्मिक तौर पर देखा जाए तो परन्तु अब धीरे–धीरे मुस्लिम व इसाई लोगों की संख्या में भी बढ़ोतरी हो रही है।

विद्यालय की अगर बात की जाए तो यहाँ पर उत्तरप्रदेश व राजस्थान से आने वाले बच्चों की संख्या अधिक है। इसके अतिरिक्त बिहार, बंगाल, मध्यप्रदेश आदि के भी बच्चे हैं। हरियाणा राज्य के बच्चों की संख्या काफी कम है। विद्यालय में सभी वर्गों के बच्चे हैं और कुछ मुस्लिम छात्र भी हैं।

मुखिया के समक्ष चुनौतियाँ

श्रीमती चम्पा रानी ने बतौर शिक्षक इस विद्यालय में सितम्बर 2016 में कार्यभार सम्भाला था और उसी दिन से इन्हें विद्यालय में मौजूद समस्याओं का आभास होने लग गया था। कार्य करना तो इन्होंने तभी से प्रारम्भ कर दिया था किन्तु फैसले लेने का पूर्णतः अधिकार न होने के कारण ज्यादा नतीजे नहीं आ पाए। मई 2018 में मुख्य शिक्षक के रिटायर होने के पश्चात् पूरे विद्यालय का भार व जिम्मेदारी इनके कन्धों पर आ गई। उस समय कई समस्याएँ इनके आगे खड़ी थी। इन चुनौतियों में जहाँ एक ओर स्कूल के इन्फ्रास्ट्रक्चर की कमी थी तो वहीं दूसरी ओर विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर में कमी थी। स्टाफ का रवैया भी अधिक सहयोगात्मक नहीं था, तो गाँव के लोगों की दखल अंदाजी भी रोड़ा अटकाती थी। अभिभावक भी अपने ड्यूटी को सही से नहीं निभा रहे थे। पूरे विद्यालय में अनुशासन की कमी थी। बच्चों में विद्यालय व विद्यालय के प्रति अपनेपन का अहसास नहीं था। सभी केवल वही कार्य करते थे जो करने नहीं था। सभी केवल वही कार्य करते थे जो करने जरूरी होते थे। अन्य कोई पहल नहीं की जाती थी।

शुरुआती प्रयास/परिवर्तन की प्रक्रिया

सर्वप्रथम तो श्रीमती चम्पा रानी ने विद्यालय के स्वरूप व इन्फ्रास्ट्रक्चर पर ध्यान दिया। स्कूल के दो कमरे खराब पड़े बैंचों से भरे थे और बच्चे नीचे फर्श पर बैठते थे। बच्चों की रिपेयर के लिए पैसों की जरूरत थी।

इन्होंने काफी लोगों को इस काम के लिए अप्रोच किया किन्तु कोई सफलता नहीं मिली। अतः इन्होंने स्वयं अपनी ओर से इस कार्य के लिए दान देने की पहल की। परन्तु अधिक राशि की आवश्यकता थी। इनकी पहल को देखकर सरपंच व नगर निगम के सदस्यों ने भी कुछ मदद की। कार्य शुरू हुआ पर राशि अब भी कम थी। इन्होंने अपने कुछ दोस्तों व रिश्तेदारों से बात की तो कुछ और मदद मिली और अंततः लगभग 220 बैंच बनकर तैयार हुए और एक तीर से दो शिकार हुए। एक ओर तो बच्चों को बैठने के लिए बैंच मिले और दूसरी ओर विद्यालय के दो कमरे भी खाली हुए जिनमें कक्षाएँ लगाई जाने लगी।

बच्चों के शौचालय भी बंद व गंदे रहते थे, अतः स्टाफ सदस्यों के योगदान से एक सफाई कर्मचारी को लगाया गया। बंद पड़े शौचालयों को खुलवाया गया। उनमें पानी की व्यवस्था की गई। पीने के पानी की टंकी को रिपेयर करवाकर उन पर टाइले लगवाई गई। इस कार्य के लिए कुछ दान इक्ट्ठा किया गया और कुछ स्कूल ग्रांट से कार्य किया गया। झूलों को ठीक करवाया गया और फिर बदला गया विद्यालय की बिल्डिंग का रंग। पारम्परिक लाल रंग जो आमतौर पर सरकारी बिल्डिंग्स पर होता है उससे हट कर स्कूल पर नीला व पीला रंग किया गया। स्कूल की अपनी एक नई पहचान बनी।

अब बात स्कूल के शैक्षणिक स्तर को सुधारने की। विद्यालय में अनुशासनहीनता को सुधारने पर काम जब शुरू हुआ तो इन्हें काफी प्रतिरोध झेलना पड़ा। एक ओर गाँव के लोग नाराज थ तो दूसरी ओर खुद का स्टाफ। परन्तु अपनी इच्छा शक्ति व कार्य शैली से काफी प्रतिरोधों को झेलने के बाद धीरे–धीरे इसमें सुधार होता चला गया। शिक्षक और विद्यार्थी सभी नियमित होने लगे व अपने कार्यों में रूचि लेने लगे। विद्यार्थियों के शैक्षणिक स्तर को सुधारने के लिए प्रार्थना सभी का प्रयोग किया जाने लगा। सुबह एक से डेढ़ घंटे स्वयं श्रीमती चम्पा रानी पूरे विद्यालय के बच्चों को अंग्रेजी विषय पढ़ाती थी और सभी शिक्षकों में भी इसमे अपनी भागीदारी निभाने को प्रोत्साहित करती थी। इससे परिणाम यह हुआ कि 'सक्षम' योजना के तहत बच्चों के परिणाम अच्छे आने लगे। प्रार्थना सभी में माइक का प्रयोग किया जाने लगा। बच्चों को रोज एक विषय दिया जाता और उस पर सूचना एकत्रित करके अगले दिन प्रार्थना में बुलवाया जाता। इससे बच्चों की Speaking Skills में सुधार होने लगा उनमें आत्मविश्वास जगा वहीं दूसरी ओर बच्चों में नैतिक गुणों का विकास होने लगा। विद्यालय अब चारों ओर अपनी ख्याति दोबारा फैलाने लगा। अभिभावक इसी विद्यालय में पढ़ाने की जिद के साथ आने लगे। इसी बीच विद्यालय स्मार्ट टी.वी. में लगवाया गया। जिससे बच्चों को पढ़ाने व बच्चों की रूचि जगाने में और मदद मिलने लगी। सम्पर्क फाउंडेशन की टीम काफी बार इस स्कूल में आई और बच्चों और शिक्षकों के साथ रिकार्ड़िग करके गई। कब बुलबुल की इकाई को प्रारंभ किया गया और कई बार बच्चों को अन्य विद्यालयों व स्थानों पर

कैम्पों में लेकर जाया गया। इससे बच्चों में विभिन्न गुणों का विकास भी होने लगा। विद्यालय स्तर पर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाने लगा। राष्ट्रीय पर्वों को धूमधाम से मनाया जाने लगा। बच्चों की भागीदारी भी हर चीज़ में बढ़ने लगी।

सुधार के लिए भविष्य की रणनीतियाँ

भविष्य के लिए जो रणनीतियाँ हैं उनमें बच्चों के लिए सुरक्षित और साफ–सुथरा मौहोल देना अहम है। इसके लिए स्कूल की चारदीवारी को ऊँचा करवाना व गेट आदि को ठीक करवाना होगा। इसके बाद शौचालयों और पीने के पानी की टंकी का पुनः निर्माण आवश्यक है। विद्यालय मे CCTV की भी आवश्यकता है तो उस पर भी कार्य करना है।

वर्तमान आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, विद्यार्थियों के लिए अब अंग्रेजी भाषा पर ध्यान देना है। इसके अतिरिक्त अपनी संस्कृति और सभ्यता के बारे में भी जागरूक करना है। नैतिक गुणों पर विशेष बल देना है और शिक्षकों के साथ–साथ विद्यार्थियों के भी चहुमुखी विकास का लक्ष्य लेकर आगे चलना है।

दृश्यमान परिणाम

कार्यक्षेत्र में इतनी सारी परेशानियों और प्रतिरोधों के बावजूद किए गए प्रयासों के परिणाम अब धीरे–धीरे दिखने प्रारंभ हो गए हैं। जहाँ एक ओर स्कूल का भौतिगत ढांचा सुधरने लगा है वहीं दूसरी ओर विद्यार्थियों की संख्या पहले की अपेक्षा अधिक हो गई है। आस–पास के क्षेत्र में स्कूल का एक अपना नाम है। लोगों के व्यवहार में अब बदलाव आने लगा है। जो लोग पहले ये कहते थे कि मैडम आपने हमारा भाईचारा खत्म करवा दिया वो ही अब ये कहने लगे हैं कि मैडम ने स्कूल चमका दिया है। विरोधी अब काम को देखकर पक्ष में बोलने लगे हैं। जिसका नतीजा यह रहा कि हमारी एक छात्रा को राज्यपाल से 'बेस्ट बुलबुल' का अवार्ड मिला। लगभग 20 लड़कियों के नाम गोल्डन एरो अवार्ड के लिए भेजे गए। विभिन्न स्तर की प्रतियोगिताओं में विद्यार्थियों की भागीदारी बढ़ने लगी है। विद्यालय में अनुशासन है। सभी की भागीदारी अब एक टीम वर्क के रूप में दिखाई देने लगी है।

विद्यालय का नाम : राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पुनहाना

जिला : नूहँ

मुख्याध्यापक का नाम : श्री जितेन्द्र सिंह

संक्षेप

भौगोलिक दृष्टि से राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के बहुत निकट लेकिन आधुनिकता के मापदण्ड से उतनी ही दूर हरियाणा के दक्षिणी भाग में बसा हुआ मेवात अँचल क्षेत्र। नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार मेवात अँचल का जिला नूहँ देश के सबसे पिछड़े जिलों में से एक है। जिले के पाँच खंडों में से एक पुनहाना खण्ड है। पुनहाना नगर होते हुए भी अपनी प्रकृति में ग्रामीण झलक देता है। नगर का मुख्य विद्यालय राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पुनहाना स्थानीय जनमानस में बड़े स्कूल के रूप में जाना जाता रहा है। यहाँ पर अधिकांश छात्र आस–पास के छोटे–छोटे गाँवों और नगर के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के परिवारों से आते हैं। लोगों का मानना रहा है कि राजकीय विद्यालय होने के कारण निजी विद्यालयों की तुलना में पढ़ाई का स्तर अपेक्षाकृत निम्न है। इस सबके बावजूद विद्यालय में छात्रों की संख्या लगभग 900 है। सुखद संकेत यह है कि लोगों की सरकारी स्कूल के प्रति हीनता की मानसिकता में पर्याप्त परिवर्तन देखने को मिल रहा है। इसका श्रेय विभाग की नीतियों और विद्यालय में कार्यरत शिक्षणगण के समवेत प्रयासों को जाता है। अब अभिभावकों व समाज के प्रबुद्धजनों का विद्यालय में आवागमन बढ़ गया है। विद्यालय के बाह्य वातावरण में आए व्यापक बदलाव का आकर्षण लोगों को विद्यालय तक खींच लाता है। बाह्य वातावरण यथा विद्यालय भवन की मरम्मरत, रंग–रोगन, पेयजल व शौचालय व्यवस्था, पौधारोपण, विद्यालय समय में छात्रों के बाहर घूमने पर प्रतिबंध, मुख्यद्वार से कक्षा–कक्षों तक पक्के मार्ग का निर्माण आदि स्थूल परिवर्तन सामान्यतः कम पढ़े लिखे लोगों की समझ में सहजता से आ जाते हैं। यह बाह्य परिवर्तन विद्यालय के आन्तरिक (शैक्षिक उत्थान) परिवर्तन की दिशा में प्रस्थान बिंदु है। आरम्भ में हमारा यह प्रसास रहा कि विद्यालय के वातावरण को इतना स्वच्छ, सुंदर और आकर्षक बनाया जाए कि वहाँ के शिक्षक, कर्मचारी और छात्र अपने अन्दर अतिरिक्त ऊर्जा का अनुभव कर सके तथा वांछित परिणाम छात्रों की अधिकतम उपस्थिति की प्राप्ति हों।

विद्यालय के सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भ

मेव (मुस्लिम) बाहुल्य क्षेत्र होने के कारण विद्यालय में अध्ययनरत अधिकांश छात्र मेव समुदाय से हैं। हालाकि पुनहाना कस्बे की जर सांख्यिकी संरचना बहुजातीय है। श्रमिक वर्ग, छोटे दुकानदार, रेहड़ी–रिक्शे वाले परिवारों से आने वाले छात्रों की संख्या अधिक है। वर्ष 2020–21 में में कोरोना महामारी के दौरान एक सुखद परिवर्तन अवश्य हुआ कि विद्यालय में सम्पन्न परिवारों से आने वाले बच्चों की संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है।

यहाँ के लोग परम्परा प्रेमी, रूढ़िवादी तथा स्वभाव में गँवई सरलता के स्वामी है। उनके जीवन में आधुनिक जीवन शैली की कृत्रिम जटिलता या भटकाव नहीं है। जीवन के संध्याकाल में पहुँच चुके पुरूष लोग तहमद (धोती का एक प्रकार) कुर्ता और स्त्रियाँ सलवार कुर्ता पहनती हैं। लोग शिक्षा के महत्त्व को समझने लगे हैं लेकिन उसका सही स्वरूप, सही दिशा क्या है? इसकी जानकारी कम लोगों को है। आम व्यक्ति के लिए शिक्षा का अर्थ येन–केन प्रकारेण कागज पर मुद्रित प्रमाण–पत्र प्राप्त कर लेना भर है। उनके लिए विद्यालयों में दी जाने वाली औपचारिक परीक्षा आधारित आधुनिक शिक्षा की तुलना में मदरसों में दी जा रही दीनी तालीम (धार्मिक शिक्षा) अधिक महत्त्वपूर्ण है। 'छोटा परिवार सुखी परिवार' उनकी दृष्टि में सरकारी नारा मात्र है। उनका मानना है कि जितने अधिक बच्चे होंगे उतनी अधिक कमाई होगी। यही कारण है कि यहाँ की जनसंख्या वृद्धि दर हरियाणा में सबसे अधिक है और संभवतः यही यहाँ के पिछड़ेपन का मुख्य कारण भी। इसके साथ आशाजनक पहलु यह भी है कि बदलाव की ब्यार शनै–शनै सही यहाँ भी पहुँच रही हैं। राष्ट्रीय जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में यहाँ युवा पीढ़ी का प्रवेश हो रहा है जिससे सामान्य जन में आगे बढ़ने, कुछ करने का विश्वास निरन्तर दृढ़ हो रहा है। बालिका–शिक्षा की दिशा में जन–जागरण हो रहा है।

मुख्याध्यापक के समक्ष चुनौतियां

एक प्रधानाचार्य के रूप में सामने खड़ी चुनौतियों और चुभने वाली वास्तविकताओं को शब्दबद्ध करना अपने पूर्ववर्ती मुखियाओं के सद्प्रयासों को नकारने जैसा होगा। किंतु सत्य यह है कि वित्त संसाधन होते हुए भी सामान्य सुविधाओं, यथा पेयजल का अभाव, जीर्ण–शीर्ण शौचालय व्यवस्था या यूँ कहिए कि राग उत्पादक इकाइयाँ, छात्रों के लिए डेस्क तथा स्टाफ के लिए कुर्सियों तक का न होना आदि विद्यालय के नाम पर किसी दारूण व्यंग्य से कम नहीं था। पेयजल के अभाव में गर्मियों में कभी–कभी समय से पहले छात्रों को घर भेजना पड़ता था। आधारभूत सुविधाओं के अभाव और शिक्षकों की अपर्याप्तता के कारण छात्रों को पूरा समय स्कूल में रोकना बहुत बड़ी चुनौती रही है। दीनी तालीम (धार्मिक शिक्षा) बाल–विवाह, स्वच्छता के अभाव में छात्रों का रोगी होना व बाल–श्रम के कारण बच्चों को स्कूल न भेजना एक आदर्श विद्यालय के निर्माण में बड़ी बाधा रही है। इन समस्याओं का समाधान कार्यालय को स्थानीय समाज की सीमा तक विस्तृत करना पड़ा। हम सभी शिक्षणगण के लिए विद्यालय का समय शाम चार–पाँच बजे तक था। खण्ड व जिला स्तरीय प्रशिक्षण शिविरों, प्रतियोगिताओं, समग्र शिक्षा के विभिन्न कार्यक्रमों/योजनाओं के कार्यान्वयन में हमारे विद्यालय से एक नहीं, दो नहीं, तीन–तीन, चार–चार शिक्षकों की ड्यूटी लगाना, शिक्षकों के अभाव से जूझ रहे विद्यालय के लिए किसी आपदा से कम नहीं रहता था। शिक्षा अधिकारियों के आदेशों की अवहेलना क्षम्य नहीं थी। स्वच्छता, विद्यालय की सम्पति व पर्यावरण के प्रति छात्रों की उदानसीनता को संवेदना में बदलना काफी कठिन रहा।

परिवर्तन की प्रक्रिया

प्रधानाचार्य के रूप में यह मेरा पहला विद्यालय था। इससे पूर्व समग्र शिक्षा के अंतर्गत तीन वर्ष सहायक परियोजना समन्वयक के रूप में काम किया। तीन वर्ष का यह अनुभव मेरे लिए किसी संचित कोष से कम नहीं था। अनुभवी व्यक्तियों की तरह मेरा भी मानना है कि समस्त शक्तियाँ, समस्त संभावनाएँ मनुष्य के अन्दर निहित हैं। कहीं से कुछ नहीं लाना होता है। जिस प्रकार ईंधन का विशाल भण्डार तब तक शीतल व सुप्तावस्था में पड़ा रहता है जब तक उसे चिंगारी का स्पर्श नहीं मिलता। चिंगारी के अभाव में उसकी क्षमता

का उपयोग संभव नहीं। प्रेरणा की चिंगारी से अपने शिक्षक सहयोगियों के शक्ति बोध को जाग्रत करना आवश्यक था। अतः सर्वप्रथम शिक्षक बंधुओं के साथ मैत्रीभाव से व्यक्ति स्तर पर तदन्तर समूह–स्तर पर संवाद स्थापित किया। इस संवाद–प्रक्रिया में बडप्पन का उपदेशभाव न होकर स्नेह और आत्मीयता का स्पर्श था। व्यक्ति निर्माण में शिक्षक की गहन भूमिका के बोध ने अध्यापकों को नई उमंग और नए उत्साह से आपूरित कर दिया। अपेक्षित परिणाम के लिए आवश्यक था कि अध्यापक स्वयं को एक आदर्श के रूप में स्थापित करें। अध्यापक की स्वयं की जीवनशैली छात्रों के लिए प्रभावी संसाधन होती है। अब हमें अल्प संसाधनों के बल पर अपना अभीष्ट प्राप्त करना था।

अलग–अलग अध्यापकों के साथ विषयवार बैठक में शिक्षण के तरीकों, विषय विशेष में छात्रों के स्तर पर व्यापक बातचीत हुई। सबसे बड़ी समस्या छात्रों की दैनिक उपस्थिति में भारी कमी थी। शत–प्रतिशत उपस्थिति का लक्ष्य अत्यंत कठिन था। अतः तय किया गया कि प्रत्येक 10 दिन में 4 प्रतिशत उपस्थिति बढ़ाने का प्रयास किया जाए। इस बारे में 'सरलता से कठिनता की ओर' सिद्धान्त का पालन किया। सबसे पहले विद्यालय के निकट रहने वाले छात्रों के लिए परिवारों से संपर्क किया तथा कक्षावार अभिभावकों की बैठक बुलाई। परिणाम अपेक्षा के आस–पास भी नहीं रहा। प्रत्येक कक्षा में संख्या 4 से 5 तक ही रही।

अभिभावकों से सम्पर्क अभियान के समानान्तर विद्यालय में आधारभूत सुविधाओं की उपलब्धता पर निरंतर कार्य किया। इस कार्य में कोई विशेष बाधा नहीं आई क्योंकि फंड्स की कोई कमी नहीं थी। यह कार्य छात्रों की दैनिक उपस्थिति बढ़ाने में सहायक रहा। कक्षा 6 से 8 तक के छात्रों में पंचतंत्र की कहानियाँ व जातक बोध कथाएँ सुनाने का कार्यक्रम आरम्भ किया गया। इसका परिणाम यह रहा कि एक ओर तो अध्यापक और छात्र एक–दूसरे के निकट आए तथा दूसरी ओर छात्रों की व्यावहारिक समझ और भाषा स्तर में उन्नति हुई। विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े महापुरूषों के जीवन–चरित्रों के वर्णन ने छात्रों के अंदर अपनी–अपनी रूचि के अनुसार आदर्श स्थापित करने का कार्य किया। दूसरे शब्दों में कहें तो उन्हें हीनता की मनोदशाा से बाहर निकलने में सहायता मिली। इससे उनकी सोच का दायरा बढ़ा तथा अधिगम और रटने में क्या अंतर है, यह भी समझ में आया।

शिक्षकों के अभाव को आपदा में अवसर मानकर वरिष्ठ कक्षाओं के छात्रों को बारी–बारी छोटी कक्षाओं में पढ़ाने के लिए भेजा। इससे छोटे बच्चों को अपने पाठ तैयार करने में बहुत सहायता मिली तथा बड़े छात्रों के अभिव्यक्ति कौशल में भी निखार आया।

National Skill Qualification Framwork के अन्तर्गत विद्यालय में ऑटोमोबाइल कौशल के चार स्तरों (कक्षा 9 से 12 तक) पढ़ाई होती है। लेकिन अभी वांछित परिणाम दूर हैं। कारण आवश्यक उपकरणों व कलपुर्जों का अभाव। दूसरा, छात्र, उनके अभिभावक व स्वयं शिक्षक भी शिक्षण की पारम्परिक पद्धति से बाहर निकलने में अंक आधारित परीक्षा प्रणाली बैठी हुई है। कौशल आधारित विषयों की सैद्धान्तिक जानकारी को विद्यार्थी अपने मस्तिष्क में ठूस लेना चाहता है। कौशल विशेष में दक्षता प्राप्त करने में उसकी रूचि अपेक्षाकृति कम है। छात्रों में व्यावसायिक कौशल के प्रति रूचि व सम्मान बढ़ाने के लिए हम उन्हें स्थानीय बाज़ार में स्थित Automobile की दुकानों व कार्यशालाओं में काम करने की प्रेरणा और अवसर देने का प्रयास कर रहे हैं। एक निश्चित समयावधि के बाद जब छात्र अपने कार्य में पर्याप्त कुशलता कर लें तो उन्हें कार्य के आधार पर सम्मानजनक प्रदान करने की व्यवस्था भी की जा रही है। इससे छात्रों में अपने कौशल की उपयोगिता व

उसके प्रति गौरव की भावना का विकास होगा। इस दिशा में कार्य हो रहा है। हमने अभी Automobile के स्तर 4 की पढ़ाई के दौरान तीन छात्रों को विद्यालय के समय के बाद अवकाश के दिनों में निजी कार्यशालाओं में काम करके सीखने के लिए तैयार किया है।

दृश्यमान परिणाम

सर्वोच्तम प्रयास के लिए अवकाश बना रहता है। भरसक प्रयास के बावजूद हमारी टीम का सर्वोच्तम अभी शेष है। विद्यालय से कहीं अधिक विद्यालय से बाहर किए गए प्रयासों का यह परिणाम हुआ है कि बहुत से बच्चे श्रमिक से विद्यार्थी बन गए हैं। बाल–विवाह के दुष्परिणामों के बारे में भी अभिभावकगण की जागरूकता प्रशंसनीय भविष्य का संकेत है। छात्रों में विद्यालय की स्वच्छता, सम्पति की रक्षा व पर्यावरण की सुरक्षा के प्रति संवेदनाओं का विकास देखने को मिल रहा है तथा स्थानीय समुदाय भी छात्रों और अध्यापकों द्वारा विभिन्न अवसरों पर किए जाने वाले कार्यक्रमों, रैलियों और अभियानों को गम्भीरता से लेने लगा है।

सुधार के लिए भविष्य की रणनीतियाँ

स्वाध्याय विद्वानों का व्यसन है। इस व्यसन की पूर्ती के लिए पुस्तकालय का होना आवश्यक है। शिक्षण संस्थानों में तो इसकी उपयोगिता और भी बढ़ जाती है। वर्तमान में हमारे विद्यालय में पुस्तकालय के नाम पर एक अलमारी में मात्र 90 से 100 पुस्तकें हैं। वर्तमान पाठ्यक्रम के लिए अप्रासंगिक हो चुकी पुस्तकों का छात्रों के लिए व्यावहारिक उपयोग नहीं है। अतः विद्यालय प्रबंधन समिति ने स्कूल में एक स्तरीय पुस्तकालय स्थापित करने का निर्णय लिया है। इसके लिए शिक्षा विभाग के सहयोग के साथ–साथ समाज सेवी लोगों की भी सहायता ली जाएगी। इस दिशा में वित्तिय सहायता करने वालों व पुस्तक दानियों की सूची तैयार की जा रही है। हमारा अगला कदम डिजिटल लाइब्रेरी की स्थापना करना है।

दिव्यांग विद्यार्थियों हेतु विद्यालय में स्थापित संसाधन कक्ष के कार्य व सेवा क्षेत्र को व्यापक करते हुए परामर्श केन्द्र में परिवर्तित किया जाएगा विशेषकर युवा पीढ़ी में नशे और जुए की बढ़ती लत को देखते हुए मनोचिकित्सकों की निःशुल्क सेवा लेने की दिशा में प्रयास किया जाएगा।

NCC की इकाई की स्थापना करवाने के प्रयासों में तेजी लाएँगे। इसके अतिरिक्त NSS की युनिट को और अधिक प्रभावी बनाया जाएगा।

योग को छात्रों की दिनचर्या का हिस्सा बनाने व आत्मरक्षा के प्रशिक्षण के लिए समय–समय पर योग–प्रशिक्षकों को विद्यालय में आमंत्रित किया जाएगा।

स्कूल विद्यार्थियों की विभिन्न जिला व राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं, अभियानों में अपने विद्यालय के छात्रों की अधिक से अधिक संख्या में प्रतिभागिता हो, ऐसा प्रयास रहेगा। विद्यालय के इतिहास में कभी दीक्षांत समारोह नहीं हुआ है। आगामी वर्ष 2021–22 में विद्यालय का दीक्षांत समारोह मनाने का निर्णय विद्यालय प्रबंधन समिति ने लिया है। इस समारोह में स्कूली शिक्षा पूर्ण करने वाले विद्यार्थियों को किसी प्रतिष्ठित विद्वान द्वारा ससम्मान शैक्षिक प्रमाण–पत्र प्रदान करवाए जाएंगे। सामज जीवन के विविध क्षेत्रों में विशेष भूमिका निभाने वाले पूर्व छात्रों को रोल मॉडल के रूप में सम्मानित किया जाएगा।

निष्कर्ष

अपना विद्यालय एक आदर्श विद्यालय हो। इस दिशा में निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता है। मैं समझता हूँ कि इस दिशा में हमने अभी आधा मार्ग भी तय नहीं किया है। शिक्षकों की भारी कमी हमारे तमाम प्रयासों पर पानी फेर रही है। यद्यपि इस कमी की पूर्ती हम ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से करने का प्रयास कर रहें है तथा इसमें आंशिक सफलता भी मिली है किंतु यह पर्याप्त नहीं है। यह ठीक है कि हमारे विद्यार्थी और अध्यापक हीनता के अंधकार से बाहर निकलकर कहने लगे हैं 'मेरा विद्यालय अच्छा विद्यालय'। लेकिन हमारा आदर्श है, हमारा लक्ष्य है 'मेरा विद्यालय श्रेष्ठ विद्यालय' और मुझे आशा है आगामी दो–तीन वर्षों में हम इस लक्ष्य को अवश्य प्राप्त करेंगे।

विद्यालय का नाम : राजकीय उच्च विद्यालय लोहाखेडा (3301)

जिला : फतेहाबाद

मुख्याध्यापिका का नाम : श्रीमती कुसुम

छात्रों को अनुशासित करना, सांस्कृतिक व शैक्षिक कार्यक्रमों में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित करना, बोर्ड़ परिणाम में सुधार हेतु अतिरिक्त कक्षाएं लगाना, कोविड़–19 के दिशानिर्देशों का पालन करवाना, छात्र हित में समय–समय पर आवश्यक सभी बैठके बुलाया जाना आदि कार्य विद्यालय को नया रूप देने में अग्रणी रहें।

विद्यालय का सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश

राजकीय उच्च विद्यालय में अधिकतर विद्यार्थी ग्रामीण परिवेश से संबंध रखते हैं। यहां पर अधिकतर विद्यार्थी राय सिख जाति से संबंध रखते हैं और यह एक पंजाबी भाषी क्षेत्र है। इनमें मुख्यतः मजदूरी करने वाले लोग हैं।

मुखिया के समक्ष चुनौतियाँ

हर नई जगह अपने आप में नई चुनौतियाँ लेकर आती है। विद्यालय में लम्बे समय से मुख्य अध्यापक का पद रिक्त होने के कारण विद्यालय के सरकारी दस्तावेज़ सुव्यवस्थित नहीं थे। विद्यार्थियों को विद्यालय से अनुपस्थित रहने की आदत थी तथा कोविड़–19 के कारण सबसे बड़ी चुनौती 10वीं कक्षा के विद्यार्थियों के आवेदन पत्र तथा 9वीं कक्षा के बच्चों का पंजीकरण करवाना रहा।

परिवर्तन प्रक्रिया

1. विद्यालय की चुनौतियों को स्वीकार करते हुए सब से पहले विद्यालय के सभी सरकारी दस्तावेजों को ठीक प्रकार से व्यवस्थित करवाया गया ताकि सभी फार्म समय पर सम्पन्न हो सके।
2. अध्यापकों को वैकल्पिक दिनों में अभिभावकों से मिलने के लिए तथा उनको प्रोत्साहित करने के लिए भेजा गया ताकि विद्यार्थियों को विद्यालय में फिर से बुलाया जा सके। कोरोना के चलते अनेक विद्यार्थी पढ़ाई छोड़ अन्य रोजगार संबंधी कार्यों में संल्गित होने लगे थे। परन्तु अध्यापकों और अभिभावकों की सहायता से 9वीं व 10वीं के विद्यार्थियों को विद्यालय में आने के लिए प्रेरित व कोविड़–19 के नियमानुसार बुलाया गया।

विद्यालय आने के बाद विद्यार्थी मानसिक रूप से शिक्षा के लिए तैयार नहीं थे। इसके लिए भारत सरकार द्वारा चलाए गए कार्यक्रम मनोदर्पण और दिए गए टोलफ्री नम्बर का उपयोग बच्चों के परामर्श के लिए किया गया। अध्यापक तथा मुख्याध्यापिका ने भी समय–समय पर परामर्श सत्र लगाए।

अन्य महत्वपूर्ण कार्य

1. दस्तावेजों को व्यवस्थित करना।
2. अभिभावकों के लिए परामर्श सत्र आयोजित करना।
3. 9वीं व 10वीं के विद्यार्थियों के लिए परामर्श सत्र आयोजित करना।
4. कोविड़–19 से बचाव के उपाय – इसके संदर्भ में निर्देशन सत्र का आयोजन किया गया। विद्यालय में कोविड़ से बचने के उपायों से संबंधित उपकरण लगवाए गए ताकि बच्चे बिमारी से बच सके। साथ ही

जगह–जगह पर कोविड़–19 संबंधी पोस्टर भी लगवाए गए। स्वच्छता का खास ख्याल रखने के लिए दो अध्यापकों की एक कमेटी बनाई गई।

5. शिक्षक गतिविधियों का आयोजन – छात्रों के लिए प्रतियोगिता का आयोजन व सभी छात्र–छात्राओं की प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में 100 प्रतिशत भागीदारी हो उसके लिए अध्यापकों को प्रोत्साहित किया और समय–समय पर संबंधी सूचना एवं आंकड़े मुख्याध्यापक कार्यालय में मंगवाएँ जाते है।
6. **Eco Club** की स्थापना एवं गतिविधियाँ – विद्यालय में Eco Club की बैठक आयोजित कर फूलदार पौधे लगवाकर विद्यालय के सौन्दर्यकरण में वृद्धि की गई। विद्यालय को सुन्दर बनाने के लिए पुताई कार्य करवाया गया। Eco Club संबंधी सूचना के पट विद्यालय में लगवाए गए।
7. आधारभूत सुविधाओं में सुधार – विद्यालय में पीने के पानी का प्रबन्ध करवाया जिसमें R.O. ठीक करवाया गया तथा वॉश बेसिन लगवाया गया। विद्यालय में आने–जाने का रास्ता पक्का करवाया गया। विद्यालय के शौचालयों की मरम्मत करवाई गई।
8. आनलाइन शिक्षा को मजबूती देना – सभी अध्यापकों के सहयोग से विद्यार्थियों को अवसर ऐप व उम्मीद ऐप का प्रयोग करना सिखाया तथा 100 प्रतिशत परिणाम प्राप्त हुआ। साथ ही विद्यालय दौबारा शुरू होने के बाद भी आनलाइन शिक्षा के प्रयोग की गृहकार्य देने तथा विद्यालय न आने वाले विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने के लिए इसका उपयोग लगातार किया गया।

निष्कर्ष

कोरोना काल में विपरित परिस्थितियों का सामना अध्यापकों व अभिभावकों के सहयोग से किया गया। विभाग द्वारा दिए गए कार्यों को सफलतापूर्वक सम्पन्न किया तथा अध्यापन का कार्य भी सुचारु रूप से चलाया। इन सभी कार्यों में एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा कराए गए प्रशिक्षण कार्यक्रम का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। एस.सी.ई.आर.टी. तथा शिक्षा विभाग पंचकूला ने समय–समय पर विभिन्न दिशानिर्देशों से अपना सहयोग बनाए रखा।

विद्यालय का नाम : राजकीय उच्च विद्यालय गोहरा

जिला : कैथल

मुख्याध्यापक का नाम : श्री श्याम लाल

मो0 न0 9416758004

विद्यालय के सामाजिक व सांस्कृतिक सरोकार

राजकीय उच्च विद्यालय गोहरा, कैथल गाँव के बिल्कुल साथ में ही यह विद्यालय ब्लाक सीवन से 7 किलोमीटर व जिला कैथल से 23 किलोमीटर दूर है। विद्यालय में जाने के लिए कोई परिवहन सेवा नहीं है। यहां की सड़के टूटी हुई व विभिन्न गाँवों से होकर जाती है। गाँव पिछड़ा हुआ है जो गुहला विधान सभा क्षेत्र में आता है। गाँव में सभी जातियों के लोग रहते है। स्कूल में पढ़ने के लिए आस–पास के अन्य गाँवों से भी छात्र आते है। गाँव गोहरा के अतिरिक्त गाँव नांगल, धोहा, व प्रभावत आदि गाँवों के बच्चे विद्यालय में पढ़ने आते है। विद्यालय स्वच्छ व सुन्दर है। कुछ कक्षाओं की हालत अच्छी नहीं है। कार्यालय की छत भी ठीक नहीं है। बिजली का बिल अधिक होने के कारण कनेक्शन कट गया है। विद्यालय में प्राथमिक विभाग में 92 बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहें हैं व 6–8 में 202 बच्चे है तथा 9–10 में 111 बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहें हैं। बच्चों का सीखने का स्तर काफी नीचे है।

विद्यालय में छात्र संख्या कुल मिलाकर 405 है। कक्षा 1–5 में 4 अध्यापक, 6–8 में 4 अध्यापक व 9–10 में 3 अध्यापक कार्यरत हैं। कक्षाओं 6 से 10 के दो–दो अनुभाग है। विद्यालय में एक कला अध्यापक व चार PGT के पद रिक्त है। इसके अतिरिक्त विद्यालय में एक कम्पयूटर टीचर व एक लिपिक कार्यरत है तथा तीन कक्षा चतुर्थ श्रेणी (चपडासी, माली, स्वीपर कम चौकीदार) कार्यरत है।

मुख्याध्यापक के समक्ष चुनौतियां

1. सबसे बड़ी चुनौती विद्यालय में बिजली कनेक्शन लगवाने की थी, जिसके लिए गाँव के सरपंच व SMC के सदस्यों से बार–बार बात की। खण्ड शिक्षा अधिकारी से मिल चुके है उन्होंने आश्वासन दिया है कि जब भी बजट होगा आपको दे दिया जाएगा। सरपंच का कहना है कि मेरा कार्यकाल समाप्त होने वाला है और मेरे पास अब फण्ड भी नहीं है। इसके अतिरिक्त इन्होंने गाँव वासियों से भी मिल सम्पर्क किया जिन्होंने पूरा आश्वासन दिया है क्योंकि बिजली का बिल 7 लाख रुपये से ज्यादा है इसलिए बिजली विभाग के SDO व JE से बात की है कि इतना ज्यादा बिल कैसे आ गया। उन्होंने दौबारा जांच का आश्वासन दिया है।

2. विद्यालय में पढ़ाई के स्तर को सुधारना भी मुख्य चुनौती थी। मुख्य विषय PGT विज्ञान व PGT गणित के पद रिक्त है। शेष विषयों की पढ़ाई सुचारु रूप से चल रही हैं। ऊपर की कक्षाएँ TGT विज्ञान को दी है व छोटी कक्षाएँ TGT गणित को दी है। बड़ी कक्षाओं 9वी व 10वीं को मुख्याध्यापक श्याम लाल जी द्वारा पढ़ाया जा रहा हैं। अतः इस दौरान गणित अध्यापक द्वारा दो–दो कक्षाएँ इक्कठी पढ़ाई जा रही हैं।

इसके अतिरिक्त अन्य चुनौतियाँ

1. ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में बच्चों की अधिक से अधिक भागीदारी।
2. विभाग द्वारा मांगी गई सूचना को समय पर देना।
3. बोर्ड़ परिणाम में सुधार करना।
4. विद्यालय को प्राप्त ग्रांट का समय पर उपयोग करना।
5. बच्चों को अवसर ऐप से परीक्षा दिलवाना।
6. मिड–डे मील का राशन घर–घर बंटवाना।
7. विद्यालय में एक कला अध्यापक व चार PGT के पद रिक्त होने पर भी विद्यालय में पढ़ाई सुचारु रूप से चलाना।
8. विद्यालय खुलने पर बच्चों की स्कूल में हाजिरी सुनिश्चित करना।

शुरुआती प्रयास/परिवर्तन की प्रक्रिया

सभी स्टाफ सदस्यों से विद्यालय के बारे में जानकारी प्राप्त कर समस्याओं को जानना व समाधान के लिए सुझाव लेना मुख्याध्यापक का प्रथम कदम था।

1. TGT विज्ञान को उपर की कक्षाएँ लेने के लिए प्रोत्साहित किया गया। छोटी कक्षाएँ PTI को दी गई जिसके कारण विज्ञान विषय का कार्य सुचारु रूप से चलाया जा रहा है।
2. अध्यापकों ने घर–घर जाकर बच्चों का अवसर ऐप संगृहित करने के लिए प्रोत्साहित किया लगभग 95 प्रतिशत बच्चों से अवसर ऐप संगृहित करवाने में सफलता प्राप्त की। ज्यादा से ज्यादा छात्रों को ऑनलाइन प्रश्नोंत्तरी में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाता रहा है।
3. बजट खर्च करने के लिए विद्यालय में कमेटी का सहयोग लिया गया।
4. विद्यालय में फल–पौधे लगवाएँ गए जिससे विद्यालय प्रांगण के सौन्दर्य में वृद्धि हुई।

दृश्यमान परिणाम

विद्यालय का प्रत्येक अध्यापक मेहनती हैं व सभी अपनी जिम्मेदारियाँ अच्छी तरह समझते हैं। सभी स्टाफ सदस्य समय के पाबन्ध है। जिस को जो भी जिम्मेदारी दी जाती है उसे बखूबी निभाते है और उपरोक्त किए

गए प्रयासों से शिक्षण कार्य सुचारु रूप से चलाया जा रहा है। स्टाफ का प्रबंध तो कठिन था परन्तु समय–सारणी में आवश्यक परिवर्तन कर समस्या को काफी हद तक सुलझा लिया गया है।

1. अध्यापकों द्वारा अतिरिक्त कक्षाएँ लेकर बोर्ड़ परिणाम में सुधार किया जाएगा।
2. 100 प्रतिशत नामांकन किया जाएगा।
3. फूल पौधों से विद्यालय को सुन्दर बनाया जाएगा।
4. ड्रॉप आउट को शून्य किया जाएगा।
5. कार्यालय की छत की मरम्मत करवाई जाएगी।
6. पानी की निकासी का उचित प्रबन्ध किया जाएगा।
7. कक्षा कक्षों में ग्रीन बोर्ड़ लगवाए जाऐंगे।
8. विज्ञान कक्ष में मैट बिछाया जाएगा।
9. अवांछनीय घास को दवाईयों की सहायता से नष्ट किया जाएगा।
10. विद्यालयों को प्रत्येक गतिविधियों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया जाएगा।
11. बिजली व पानी की व्यवस्था को सुचारु किया जाएगा।
12. विद्यालय में पंखे की मरम्मत करवाई जाएगी।
13. अभिभावक व अध्यापक सम्पर्क करवाकर अभिभावकों को बच्चों की पढ़ाई के लिए प्रेरित किया जाएगा।
14. किसी भी प्रकार की समस्या आने पर सभी अध्यापकों की सलाह ली जाएगी व पंचायत का सहयोग लिया जाएगा।

निष्कर्ष

कोविड़–19 के चलते विद्यालय काफी समय से बंद थे जिसके कारण बच्चों की पढ़ाई का बहुत नुकसान हुआ है। परन्तु नए–नए ऐप के द्वारा व ऑनलाइन कक्षाओं द्वारा इस कमी को काफी हद तक कम करने में सफलता प्राप्त की है। इन ऐप के द्वारा बच्चों ने शिक्षण के नए–नए तरीकों के द्वारा अपनी पढ़ाई की है। यह सब अध्यापकों के परिश्रम से ही संभव हो सका। स्टाफ सदस्यों व पचांयत के सहयोग से विद्यालय प्रगति व चहुँमुखी विकास करेगा। बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए सभी स्टाफ सदस्य पूर्ण प्रयास करेंगे।

विद्यालय का नाम : राजकीय उच्च विद्यालय लालूपुरा, ब्लॉक घरौंडा

जिला : करनाल

मुख्याध्यापिका का नाम : श्रीमती कृष्णा कुमारी

विद्यालय के सामाजिक व सांस्कृतिक सरोकार

राजकीय उच्च विद्यालय लालूपुरा की स्थापना प्राथमिक पाठशाला के रूप में सन 1950 में हुई। इसके पश्चात् पंचायत व ग्रामीण लोगों के प्रयत्न से 22 फरवरी 1993 में यह माध्यमिक स्कूल बना। ग्रामीण बालिकाओं के हित को मद्देनजर रखते हुए कुछ बुद्धिजीवी वर्ग के प्रयासों से 3 दिसम्बर, 2000 को यह विद्यालय उन्नयन होकर उच्च विद्यालय के रूप में स्थापित हुआ। यह विद्यालय घरौंडा से 12.5 किलोमीटर की दूरी पर है और विद्यालय से यमुना नदी मात्र 1 किलोमीटर की दूरी पर है। इस गाँव में अधिकतर गुर्जर जाति के लोग हैं परन्तु गाँव के लोग व पंचायत काफी सहयोगी भावना से ओत–प्रोत है। पंचायत के सहयोग से ही विद्यालय में बिजली की समस्या का समाधान किया गया तथा मरम्मत आदि कार्यों को भी अंजाम दिया जाता रहा है।

विद्यालय के सभी अध्यापक अपने कार्य के प्रति बहुत ही समर्पित भाव रखते हैं। कोई किसी भी पद पर क्यों न हो सभी एक–दूसरे का बहुत सम्मान करते हैं तथा किसी भी काम को करने में हिचकते नहीं है और मिलजुल कर कार्य करते हैं। जिस दिन मैं कार्यभार ग्रहण करने गई तो देखा कि एक व्यक्ति पौधों में पानी दे रहा है बाद में पता चला कि वह स्कूल के डी.डी.ओ. है। विद्यालय में चौकीदार और माली, स्वीपर के पद रिक्त होते हुए भी अध्यापकों द्वारा संग्रह से एक व्यक्ति जोकि चौकीदार का कार्य करता है, की व्यवस्था की हुई है।

विद्यालय में कक्षा 6 से 8 छात्रों की संख्या = 180, विद्यालय में कक्षा 9 से 10 छात्रों की संख्या = 125, विद्यालय में कक्षा 1 से 5 छात्रों की संख्या = 213, विद्यालय में PGT = 6, विद्यालय में TGT = 6, विद्यालय में JBT = 6, एक संगणक अध्यापक लेब अटैन्डंट

मुख्याध्यापक के समक्ष चुनौतियां

किसी भी नए कार्य को करने में चुनौतियां व समस्याएं तो आती ही हैं परन्तु हमें इन्हे सहर्ष स्वीकार करना चाहिए। हमारे इरादे बुलन्द हो, सोच सकारात्मक हो, मिलजुल कर कार्य करने की भावना हो, अपने आप को परिवार का मुखिया कम, सदस्य ज्यादा मानकर, सौहादर्पूण व्यवहार रखकर, ऊर्जावान क्षमता से कार्य करने व विद्यार्थियों के हित को ध्यान में रखकर, स्टाफ सदस्यों के दुखः सुख सभी में शामिल होकर, ग्रामीणों के साथ

सामंजस्य बनाकर, ग्राम पंचायत व SMC सदस्यों को विद्यालय की परिस्थितियों व समस्याओं से अवगत कराकर चुनौतियों से पार पा सकते हैं, यही सोचकर विद्यालय में प्रवेश किया और चुनौतियों का अवलोकन किया जो कि निम्न थी :

1. ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में छात्रों की अधिक से अधिक भागीदारी होना।
2. CRC मुखिया होने के नाते क्लस्टर (समूह) की पूर्ण जिम्मेदारी।
3. Face lifting का कार्य पूरा कराना।
4. प्रत्येक बजट का सही दिशा में पारदर्शिता से उपयोग करना।
5. विभाग की सभी सूचनाओं को समय पर देना।
6. विद्यालय में छात्रों के न होने पर भी बोर्ड़ के आवेदन पत्र पूर्ण करवाना।
7. बोर्ड़ का परिणाम को बेहतर बनाना।
8. मिड–डे मील का राशन कोरोना होते हुए भी घर–घर बंटवाना।
9. विद्यालय में गणित, चित्रकला एवं पी.टी.आई. पद रिक्त होना।
10. विद्यालय खुलने पर कक्षा 9 से 10 और बाद में कक्षा 6 से 8 के छात्रों की उपस्थिति बढ़ाना।

शुरुआती प्रयास/परिवर्तन की प्रक्रिया

इन सभी चुनौतियों को सहर्ष स्वीकार किया और अपने सभी स्टाफ सदस्यों की बैठक लेकर उनके सहयोग से प्रत्येक कार्य को कुशलतापूर्वक सफल बनाया और आगे भी यही कोशिश रहेगी कि पूर्ण योगदान देकर विद्यालय में सौंपी गई जिम्मेदारियों को पूरा किया जाए। इसके लिए निम्न कदम उठाए गए –

1. विद्यालय में कार्यग्रहण करने के पश्चात् सभी अध्यापकों व क्लस्टर विद्यालय मुखियाओं के साथ बैठक आयोजित कर उनकी क्षमताओं व दक्षताओं को परखते हुए कार्य को बाँट कर प्रत्येक को जिम्मेदारी सौंप दी गई ।
2. ज्यादा से ज्यादा ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता हो इसके लिए अध्यापकों को प्रोत्साहित कर छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रेरित किया।
3. सभी प्राध्यापकों की बैठक कर बोर्ड़ परिणामों को बेहतर करने की योजना तैयार की।
4. पहले स्वयं सभी ऐपस् की पूर्ण जानकारी ली व फिर अध्यापकों के साथ बाँटी व सभी ऐपस् का सही ढंग से प्रयोग करें जैसे शिक्षा मित्र कार्य, अवसर ऐप पर पंजीकरण, आनलाइन गृहकार्य देना आदि कार्यों व छात्र उपस्थिति, सक्षम समीक्षा ऐप का प्रयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया।
5. बजट का खर्च करने के लिए कमेटी का गठन किया गया।
6. विद्यालय खुलने पर प्राथमिक चिकित्सालय में चिकित्सक से बातचीत कर छात्रों का चैकअप कराने व अधिक से अधिक छात्रों का विद्यालय में उपस्थिति के लिए अध्यापकों द्वारा घर–घर जाना व फोन पर अभिभावकों से बातचीत करना।

7. अध्यापकों द्वारा बच्चों के घर–घर जाकर ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता कराना।
8. CRC के कार्यों की सूचना देने के लिए CRC व्हाट्सअप समूह बनाना।

9. गणित की कक्षा कम्पयूटर अध्यापक द्वारा पढ़ाए जाना जिससे बच्चों का कोई नुकसान न हों।

दृश्यमान परिणाम

राजकीय उच्च विद्यालय लालूपुरा का प्रत्येक अध्यापक मेहनती, समय का पाबंद, कर्तव्यपरायण, मेलजोल भाव से परिपूर्ण व बढ़चढ़ कर कार्य करने की क्षमता व छात्रों के हितों को ध्यान में रखने वाला हैं इसलिए सभी कार्य स्टाफ की सहायता से समय पर पूर्ण कर लिए जाते हैं।

1. प्राध्यापकों द्वारा अतिरिक्त कक्षाएँ लेकर बोर्ड़ परिणाम बेहतर लाने के लिए तत्पर हैं।
2. CRC के सभी विद्यालयों की सभी सूचनाएँ समय पर प्राप्त होती है।
3. ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता – विद्यालय खुलने से पहले 65 से 70 प्रतिशत था परन्तु अब 80 से 85 प्रतिशत तक रहता है।
4. Face Lifting का कार्य चित्रकला आदि से भवन की सभी दीवारों पर सुन्दर–सुन्दर शिक्षाप्रद एवं पाठ्यक्रम व सामान्य ज्ञान के चित्र बनवाए गए व विद्यालय का सौन्दर्यकरण किया गया।
5. विद्यालय में बिजली, पानी व शौचालय सभी की पूर्ण व्यवस्था है।
6. भूमिगत पानी संचय व्यवस्था कराई गई है।
7. मुख्याध्यापक कार्यालय में भी नई कुर्सियाँ व पर्दे आदि लगाकर सौन्दर्यकरण किया गया।

सौन्दर्यकरण के कार्यों का श्रेय श्री मुनेश गुप्ता जी जो कि बहुत ही कर्मठ व सहयोगी स्वभाव के है व सभी समिति के सदस्यों को देना चाहूँगी। इन सभी के सहयोग से सारी चुनौतियों का कब समाधान हो गया उनका अहसास भी नहीं हुआ।

सुधार के लिए भविष्य की रणनितियाँ

1. 100 प्रतिशत छात्र उपस्थिति सुनिश्चित करना।
2. छात्रों का नामांकन बढ़ाना।
3. विद्यालय में समय–समय पर महान हस्तियों व बुद्धिजीवियों द्वारा प्रोत्साहित भाषणों का आयोजन कराना।
4. समय–समय पर अध्यापकों व अभिभावकों की बैठक कराकर अभिभावकों के विचारों को सुनना व नए विचार संगृहित कर कुछ नया करना।
5. बच्चों के अन्दर छिपी प्रतिभाओं को उजागर करने के लिए नई–नई गतिविधियाँ कराना।
6. बोर्ड़ परिणाम बेहतर बनाना।
7. छात्रों को प्रत्येक गतिविधियों में भाग लेने के लिए जागरूक करना।

निष्कर्ष

कोरोना काल में भले ही काफी पेरशानियाँ आई परन्तु सरकार व विभाग के द्वारा नई–नई ऐपस् व आदेशों की पालना करते हुए निष्ठावान व मेहनती अध्यापकों के सहयोग से छात्रों ने इस मुश्किल समय में उपकरणों से नए–नए शिक्षण के तरीके सीखे व समस्याओं से पार पाते हुए शिक्षा अध्ययन को सुचारु रखा और एक मुख्याध्यापक के पद पर आने वाली चुनौतियों का सामना करना सीखा।

इन सभी समस्याओं के समाधान में एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा दिया जाने वाला प्रशिक्षण में विभिन्न महान विभूतियों और बुद्धिजीवियों का बहुत बड़ा योगदान रहा। जिन प्रोत्साहित भाषणों में हमने भाग लिया उनसे महसूस किया कि मैं अपने आप में और भी ज्यादा सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयत्न कँरु व प्रत्येक कार्य को एक अच्छे नेता की तरह पूर्ण करने का भरसक प्रयत्न कँरु। मैं दिल से मैडम अंशु सिंगला जी विभागाध्यक्षा अध्यापक शिक्षा अुनभाग, डॉ. अश्विनी वशिष्ठ जी समन्यवक स्कूल लीडरशिप अकादमी हरियाणा व डॉ. रजनी जी कंसलटेंट स्कूल लीडरशिप अकादमी हरियाणा सभी को बहुत–बहुत आभार व धन्यवाद करती हूँ कि मुझे इस प्रशिक्षण का हिस्सा बनाया। राष्ट्र के भावी निर्माता सभी छात्रों के हित में समर्पित।

विद्यालय का नाम : राजकीय उच्च विद्यालय सोतई, बल्लभगढ़
जिला : फरीदाबाद

मुख्याध्यापिका का नाम : श्रीमती अरुणा कुमारी

संक्षेप

ग्रामीण परिवेश के लोग शिक्षा के महत्त्व को समझते तो है परन्तु उसे व्यवहार में लाने या उसके लिए प्रयास करने में संकोच महसूस करते है। ऐसा ही व्यवहार सतोई गाँव वासियों का पाया गया जहां वो विद्यालय की टूटी हुई दीवार और द्वार पशुओं को बांधने के लिए इस्तेमाल करते हुए दिखे। इस व्यवहार ने शिक्षा उद्देश्य, सम्मान एवं उसकी उपयोगिता को क्षति पहुँचाई। पशुपालन या गोबर संबंधी कार्य अपनी जगह महत्त्वपूर्ण है। लेकिन प्रत्येक कार्य के लिए कुछ स्थान एवं वातावरण निश्चित होता है। जिस प्रकार शयनकक्ष या रसोई घर व मेहमान कक्ष में पशु नहीं बंध सकते। अर्थात् घर में पशुपालन स्थान अलग होता है। तो किस मंशा से विद्यालय के चारों तरफ पशु बांधे जा रहे थे और गाँव का प्रशासन ये सब अनदेखा कर रहा था। विद्यालय आने वाले छात्र, अध्यापक, अभिभावक, अतिथि सभी की क्या प्रतिक्रिया रहती होगी और ये प्रतिक्रियाएँ शिक्षा की गतिविधियों को कहां तक प्रभावित करती होगी। विद्यालय के द्वार पर बंधे पशु क्या किसी अभिभावक को इस विद्यालय में अपने बच्चों के नामांकन के लिए प्रोत्साहन दे रहे होंगे? या फिर यह एक छोटा सा पहलू सम्पूर्ण विद्यालय की छवि और गतिविधियाँ दोनों में ही एक बाधा था। जिसका निवारण एक संघर्ष था।

विद्यालय का सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश

राजकीय उच्च विद्यालय सोतई, बल्लभगढ़ से करीब 9 से 10 किलोमीटर दूर गाँव चंदावली के दाहिने ओर स्थित है। प्राइमरी स्कूल भी इसी प्रांगण में है। यह गाँव के बीच में स्थित है। विद्यालय ग्रामीण क्षेत्र जोन–4 में आता है। विद्यालय में सभी धर्म के बच्चे पढ़ते है। ज्यादातर बच्चे हिन्दू हैं। किसी विशेष धर्म का प्रभाव विद्यार्थियों पर नहीं है। 6 से 10 तक कक्षाओं में 103 छात्र व 94 छात्राएँ हैं। 6 अध्यापक व 4 अध्यापिकाएँ कार्यरत हैं।

मुखिया के समक्ष चुनौतियाँ

विद्यालय की चारदीवारी जगह–जगह से टूटी हुई थी, कोई भी अवांछित व्यक्ति किसी भी समय अंदर घुस सकता था। मुख्य द्वार पर दीवार के साथ आसपास रहने वाले ग्रामीणों द्वारा भैंसे बांधी जाती थी। विद्यालय में बडा मैदान होने के बावजूद भी व्यवस्थित नहीं था। गाँव के प्रमुख सदस्यों को बुलाकर बैठक ली गई, जिसमें

पता चला कि सरपंच कुछ शिकायतों की वजह से अपना बस्ता जमा करवा चुके थे जिसकी जांच चल रही थी। वह विद्यालय में बजट खर्च करने में असमर्थ थे।

1. विद्यालय के बाहर ग्रामीणों द्वारा भैंसों/पशुओं का बांधना।
2. दो कमरों की छत से पानी टपकना।
3. कक्षाएँ बिठाने के लिए दो कमरों की कमी।
4. मुख्याध्यापिका के कार्यालय की स्थिति बड़ी दयनीय थी।
5. चार दीवारी की जर्जर अवस्था।
6. मुख्य द्वार की जर्जर अवस्था।

शुरुआती प्रयास

1. विद्यालय में बरसात में दो कमरों की छत से पानी टपकता था। छत को मरम्मत कराने के प्रयास PGT Incharge की देखरेख में एक स्कूल अध्यापक द्वारा पहले से ही Rotary Club से संपर्क किए हुए थे। मेरे मुख्याध्यापक के पद पर नियुक्त होने के बाद सभी के कार्य Rotary Club Midtown Faridabad द्वारा किया गया। मेरी देख–रेख में कार्य पूर्ण हुआ।
2. गाँव के मौजूदा सदस्यों की एक बैठक बुलाई गई। उनसे निवेदन किया गया कि यह विद्यालय तुम्हारे गाँव का है, आपके बच्चों के लिए हैं। विद्यालय की स्वच्छता और विद्यार्थियों को अच्छा वातावरण देना, आपकी और हमारी साझा जिम्मेदारी है। सबने मिलकर विद्यालय के सामने रह रहे लोगों से निवेदन किया कि आप पशुओं को विद्यालय के साथ न बांधे ताकि विद्यालय का वातावरण दूषित न हो। कई बार प्रयास करने के पश्चात् इसका निवारण हो पाया।

3. अस्थाई रूप में माली लगाकर पौधारोपण व फूल लगवाने का काम करवाया गया। मैदान को व्यवस्थित कराया गया।
4. विद्यालय स्टाफ की बैठक बुलाकर सभी को समय की पाबंदी से अवगत करवाया गया।
5. स्टाफ द्वारा विद्यार्थियों व माता–पिता से ऑनलाइन विचार–विमर्श करवाकर शैक्षणिक स्तर को बेहतर बनाने का प्रयास किया गया।
6. सभी अध्यापकों को प्रेरित किया कि विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करें ताकि बोर्ड़ परीक्षा में सभी विद्यार्थी अच्छे अंक लेकर पास हो।

दृश्यमान परिणाम

विद्यालय की दीवार के साथ भैंस बंधती थी अब नहीं बंधती। विद्यालय अच्छा दिखने लगा है। विद्यालय का वातावरण ठीक होने के कारण विद्यार्थियों का मन पढ़ाई में लगने लगा है। आने–जाने के लिए रास्ता साफ हो

गया है। दीवार ऊँची होने के कारण बाहरी गतिविधियों का प्रभाव विद्यार्थियों की पढ़ाई पर नहीं पड़ता। अब बारिश के दिनों में विद्यार्थियों की पढ़ाई सुचारु रूप से चलती रहती है। जिसके परिणाम आने वाले समय में मिलेंगे।

भैंस बांधने को हटाने के लिए पहले गाँव के सरपंच को बुलाकर बात की गई। फिर SMC की बैठक बुलाकर बात करके चर्चा की गई। गाँव के मौजूदा व्यक्तियों को बुलाकर कहा गया। 4 अध्यापकों को उनके घर भेजा गया। भैंस मालिक को विद्यालय में बुलाकर कहा गया। इन प्रयासों के बाद भैंसों का विद्यालय की दीवार के साथ बंधना बंद हुआ।

1. कई बार प्रयास करने पर ग्रामीणों द्वारा विद्यालय मुख्यद्वार के साथ भैंस बांधने का काम बंद हुआ।
2. दो कमरों की छत से पानी टपकना बंद हुआ।
3. Face lifting grant द्वारा मुख्यद्वार के सौन्दर्यकरण का कार्य प्रगति पर है। अभी मुख्याध्यापिका पद पर कार्यग्रहण किए हुए ज्यादा समय नहीं हुआ है कि बाकी बचे हुए कार्य समयानुसार पूरे होंगे।

सुधार के लिए भविष्य की रणनीतियाँ

1. NTPC/Rotary Club/HSIIDC से सम्पर्क करके विद्यालय में कक्षा कक्षों के निर्माण के लिए प्रयास जाएगा।
2. विद्यालय में Smart कक्षा कक्ष के प्रबंध के प्रयास जारी है।
3. शिक्षा में समाज की साझेदारी का बहुत महत्त्व है। इसी दिशा में गाँव के लोगों से संबंध प्रगाढ़ करने व उनके सहयोग को बढ़ाने के प्रयास किए जाऐंगे।

निष्कर्ष – विभाग के आदेशों की पालना करते हुए विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास ही मुख्याध्यापिका का एक मात्र उद्देश्य रहा है। इसके चलते जो भी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष साधन एवं स्थितियाँ सुधार एवं परिवर्तन की अपेक्षा करती है, उनके परिवर्तन के प्रयास किए जाते रहेंगे।

विद्यालय का नाम : राजकीय उच्च विद्यालय राई

जिला : सोनीपत

मुख्याध्यापिका का नाम : श्रीमती पुष्पा मान

विद्यालय का सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भ में

विद्यालय भवन औद्योगिक क्षेत्र राई में स्थित है। विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने वाले लगभग विद्यार्थियों के अभिभावक राई में स्थित औद्योगिक इकाइयों में कार्यरत हैं तथा उनका रूझान अपने बच्चों की शिक्षा के साथ उनसे कार्य करवाने का भी है ताकि वह अपने परिवार को आर्थिक संबल प्रदान कर सकें। अतः बहुत से विद्यार्थी इन औद्योगिक इकाइयों में काम भी करते हैं।

विद्यालय का प्रांगण संकीर्ण है। सभी छात्र क्रियाशील प्रवत्ति के हैं तथा शिक्षा या उससे संबंधित प्रत्येक बात को शीघ्रता से ग्रहण करने की क्षमता रखते हैं इस विद्यालय में कक्षा 1–5 तक 549 छात्र संख्या और 6–10 तक 464 छात्र संख्या है। विद्यालय CRC होने के कारण SIM, LA व क्लर्क भी है। कर्त्तव्यों के प्रति पूर्ण रूप से ईमानदार व सचेत है। सभी अपने कार्यों को पूरी निष्ठा, तत्परता व सावधानी से करने में सक्षम हैं।

मुखिया के समक्ष चुनौतियाँ

1. कोरोना की सभी सावधानियाँ बरतते हुए शिक्षा प्रदान करना तथा पाठ्यक्रम भी पूर्ण करवाना। इस कोरोना काल में विद्यालय छोड़ कर चले गए छात्रों को वापिस बुलाना ताकि वह अपनी शिक्षा पूरी कर सकें। विद्यालय औद्योगिक क्षेत्र के पास होने के कारण अधिकतर छात्र प्रवासी है तथा लॉकडाउन के समय में आर्थिक संबल के लिए उनके माता–पिता ने उनसे मजदूरी, ठेला लगाना जैसे कार्यों में लगा दिया था।
2. विद्यालय में छात्र संख्या के अनुसार कक्षा–कक्ष भी पर्याप्त संख्या में नहीं है। छात्रों के बैठने के लिए डैस्क, बैंच की भी वांछित व्यवस्था नहीं है।
3. लॉकडाउन के कारण लम्बी अवधि के बाद विद्यालय दोबारा खोले गए इस कारण विद्यार्थियों की रूचि विद्यालय मे न आने की हो गई थी तथा वे वर्दी में भी नहीं आते थे। विद्यालय न आने के कारण लेखन कार्य से अरूचि उत्पन्न हो गई थी तथा गति भी धीमी हो गई थी। लॉकडाउन के कारण विद्यालय की स्थिति अस्त व्यस्त प्रतीत हुई। जिसे पुनः सुचारु रूप से संचालित करना चुनौतिपूर्ण था।
4. ESHM को सदैव 6–8 स्टाफ के प्रति शिकायत रहती है कि TGT स्टाफ द्वारा उन्हें इच्छित सम्मान प्रदान नहीं किया जाता तथा उनकी बातों को अनसुना कर दिया जाता है, उनके द्वारा प्रत्येक अध्यापक/अध्यापिका की छानबीन व उनके कार्यों में हस्तक्षेप करना इस समस्या का मूल कारण है।

5. मुख्याध्यापिका धीरे–धीरे ESHM व TGT स्टाफ को समझाने का प्रयास कर रही है, ताकि विद्यालय में होने वाले किसी भी मनमुटाव से निजात मिल सके। ESHM व TGT स्टाफ के बीच सौहाद्रपूर्ण वातावरण उत्पन्न करवाना और विद्यालयी कार्यों को सुचारु रूप से चलवाना ही मुख्याध्यापिका का एक उद्देश्य है।
6. विद्यालय के मुख्यद्वार के सम्मुख सारे गाँव का गन्दा पानी भरा रहता है, क्योंकि इस जलभराव की निकासी की कोई स्थायी व्यवस्था नहीं है। इस कारण मक्खी, मच्छर व जानवर तथा गन्दी बदबू चारों ओर फैलती है जो कि किसी भी प्रकार से विद्यालय वातावरण के लिए उचित नहीं है।
7. विद्यालय के कुछ अध्यापकों की प्रवृत्ति विद्यालय के कार्यों को करने तथा पूरा समय विद्यालय में रहने की नहीं है। प्रतिदिन उनकी यही चेष्टा रहती है कि किस प्रकार विद्यालय के कार्यों से बचा जाए।
8. मुख्याध्यापिका अपनी सूझ–बूझ व आपसी तालमेल से धीरे–धीरे उन्हें अपने विद्यालयी कर्त्तव्यों के प्रति जागरूक करने का प्रयास कर रही है, ताकि विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्र उनकी प्रतिभा व ज्ञान से पूर्णतः लाभान्वित हो सकें।
9. विद्यालय के बाहर ठेले एवं पटरी बाजार का होना, जिससे विद्यालय की गतिविधियों में बाधा आती थी।

शुरुआती प्रयास

1. विद्यालय को पूर्ण रूप से व्यवस्थित किया जा चुका है। राई ब्लॉक में अमेरिका की कम्पनी स्थित है जो विद्यालयों में सुधार कार्य करवाते है चूँकि मुख्याध्यापिका कम्पनी सदस्यों से पहले से परिचित थी इसलिए उनसे सम्मान देते हुए सहयोग लिया गया। जिला शिक्षा अधिकारी से अनुमति लेकर विद्यालय में अनेकों कार्य करवाए गए।
    - सभी कमरों का जीर्णोद्धार, कोटा स्टोन, लाइट व पंखे आदि लडके, लड़कियों एवं स्टाफ के पृथक–पृथक शौचालय।
    - विज्ञान लैब व कम्पयूटर लैब का कार्य
    - स्कूल के मैदान में टाइल्स लगवाना, मंच व स्तम्भों पर भी आधुनिक रूप में कार्यालय व लिपिक व सिम कक्ष का निर्माण
    - स्टाफ किचन का निर्माण
    - विभाग द्वारा दो स्मार्ट क्लास रूम को हाल ही में निर्माण किया गया।
2. समय–समय पर स्टाफ मीटिंग लेकर मनमुटाव समाप्त करवाए गए। प्रत्येक सदस्य को उसकी जिम्मेदारी समझकर उचित सम्मान दिया गया। विद्यालय सुधार के प्रत्येक कार्य में स्टाफ सदस्यों के लिखित सुझाव लिए गए। सभी वित्तीय कार्यों व ग्रांट्स को स्टाफ के समक्ष खुलकर परदर्शी तरीके से इस्तेमाल किया गया। इन सभी प्रयासों ने विद्यालय की गतिविधियों को सुचारु रूप से चलाने में बहुत मदद की।

3. लॉकडाउन के पश्चात् विद्यार्थियों को नियमित व समय पर विद्यालय लाना व लेखन कार्य में उनकी रूचि बढ़ाने हेतु प्रयास खासतौर से ऐसे परिवेश में जहां छात्र व अभिभावक भी अनेक कार्यों में लग गए थे जैसे ठेला लगाना (चाऊमीन व अन्य खाद्य पदार्थों के) लड़कियों द्वारा घरों में कार्य करवाना, कम्पनी मजदूर आदि जिसके लिए मुख्याध्यापिका द्वारा निम्नलिखित कदम उठाए गए :
    - प्रत्येक विद्यार्थी के माता–पिता से सम्पर्क किया गया।
    - कक्षावार विद्यार्थी समूह बनाए गए, छात्रों के संरक्षक बनाए गए।
    - अध्यापकों द्वारा आस–पास के क्षेत्रों का सर्वे करवाया गया।
    - औद्योगिक इकाइयों में पुरुष अध्यापकों को भेजा गया व बाल मजदूरी के प्रति जागरूक किया गया।
    - SMC सदस्यों की मदद ली गई।
    - लेखन कार्य नियमित करवाया जा रहा है।

    उक्त प्रयासों के फलस्वरूप काफी छात्र जो सम्पर्क में भी नहीं थे जो पुनः विद्यालय आ चुके हैं व विद्यालय में तकरीबन 80 प्रतिशत छात्र प्रतिदिन कोरोना–19 के नियमों का पालन करते हुए आते है व शिक्षण का कार्य सुचारु रूप से चल रहा है।
4. विद्यालय के मुख्यद्वार के दोनों तरफ प्रवासी लोगों द्वारा ठेला, पटरी, खोखे बना दिए गए थे तथा विद्यालय बाहर से पटरी बाजार सा प्रतीत होता था। इन ठेलों और पटरियों को स्टाफ, सरपंच व कुछ गाँववालों की मदद से हटवा दिया गया है। अब वह सुन्दर व आकर्षक बन चुका है face lifting grant का प्रयोग कर रंग करवाया गया अन्दर व बाहरी दीवार पर सुन्दर पेन्टिंग करवाई गई। विद्यायल का नाम सुन्दर व मोटे अक्षरों से लिखवाया गया। प्रतिदिन सुबह आकर मुख्याध्यापिका द्वारा व अन्य पुरुष अध्यापक की सहायता से बाहर की स्थिति का मुआइना किया जाता है और साफ सफाई का ध्यान रखा जाता है।

Before

After

5. मुख्यद्वार के सामने गन्दे पानी के ठहराव के कारण विद्यालय में प्रवेश करना भी मुश्किल था उसे भी कुछ हद तक संभाल लिया गया है, लगातार उच्च अधिकारियों से सम्पर्क किया गया। स्थानीय निवासियों में जागरूकता पैदा की गई व निगम कर्मचारियों की मदद से मुख्यद्वार के सामने का रास्ता साफ करवाया गया। अब पानी तो नहीं ठहरता परन्तु अभी और कार्य करवाना बाकी है।
6. विद्यालय के वार्षिक परीक्षा परिणाम में सुधार किया जा रहा है गत वर्ष दसवीं कक्षा में अधिकतम अंक 92.4 प्रतिशत थे। इस वर्ष वार्षिक परीक्षा परिणाम घोषणा व प्रवेश उत्सव को हमारे राष्ट्रीय पर्व की भांति धूमधाम से मनाने का विचार स्टाफ के साथ किया गया है। यदि समय पर परीक्षा परिणाम

घोषित होगा व प्रवेश आरम्भ कर दिए जाऐंगे तो निश्चित ही विद्यार्थियों की वृद्धि की जा सकती है। इस कार्य को पूर्ण करने के उद्देश्य से औद्योगिक क्षेत्र के मालिकों से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास किया जा रहा है।

दृश्यमान परिणाम

विद्यालय में कार्यरत प्रत्येक अध्यापक, चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी, क्लर्क SIM, Lab Attendent, कुक, माली, सफाई कर्मचारी सभी अपने कार्य को पूर्णतः ईमानदारी से करते है। परन्तु लॉकडाउन के बाद विद्यालय खुलने के कारण जो अव्यवस्थाएँ थी जो धीरे–धीरे दूर की जा रही है। सभी विद्यार्थियों द्वारा विद्यालयी गतिविधियों में बढ़–चढ़ कर भाग लिया जाता है जैसे कला उत्सव, विज्ञान प्रश्नोत्तरी, विज्ञान व गणित प्रतियोगिताएँ, निबन्ध प्रतियोगिता तथा किसी भी प्रकार की क्विज संबंधी प्रतियोगिता। इन प्रतियोगिताओं में भाग लेकर प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान भी प्राप्त करते हैं। सभी स्टाफ सदस्य विद्यालय में आने वाली किसी भी समस्या को आपसी तालमेल व सहमति से दूर करने का प्रयास भी करते है।

सुधार के लिए भविष्य की रणनितियाँ

1. छात्र नामांकन में वृद्धि करना।
2. MAT INDIA CSR के सहयोग से विद्यालय में कमरे व सभागार का निर्माण करवाना।
3. छात्रों के नैतिक मूल्यों में वृद्धि करना।
4. छात्रों को विद्यालय में होने वाली प्रत्येक गतिविधियों में भाग लेने हेतु प्रेरित करना।
5. मुख्यद्वार के सामने जलभराव का स्थायी समाधान करवाना।
6. मुख्यद्वार के दोनों ओर लगी छोटी–छोटी दुकानों या रेहडियों को हटवाना।
7. शिक्षा के स्तर को उच्चतम स्तर पर ले जाना।
8. परीक्षा परिणाम में वांछित सुधार लाना।

निष्कर्ष

राजकीय उच्च विद्यालय राई, सोनीपत, राई औद्योगिक क्षेत्र के पास स्थित है। अतः छात्र संख्या मुख्यतः प्रवासी है, जो कि मूल रूप से आस–पास के राज्यों से हैं। वे हरियाणा के माहौल से भी अनभिज्ञ है। अधिकतर अभिभावक इस क्षेत्र में मजदूरी करते है। छात्र मेहनती व क्रियाशील प्रवृत्ति के है। नवाचार कार्यों में रूचि दिखाते है। अध्यापकों के सहयोग से विद्यालय में होने वाली गतिविधियों में भाग लेते हैं और यथा स्थान भी प्राप्त करते हैं। दिए गए कार्य को सभी छात्र पूरी मेहनत, लग्न व निष्ठा से करने का प्रयास करते है। जिसमें उन्हें सफलता भी मिलती है। अध्यापकों द्वारा किया गया सहयोग विद्यार्थियों को सकारात्मक उन्नति के शिखर पर ले जाएगा। शिक्षा स्तर के साथ सम्पूर्ण विद्यालय स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयास किया जाएगा। ताकि भविष्य में विद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में नए आयामों को हासिल कर सकें। कोरोना के प्रत्येक दिशानिर्देश को विद्यालय स्तर पर लागू करना तथा विद्यार्थियों को अनुशासन व नियमों का पालन करने हेतु समय–समय पर उचित मार्गदर्शन व परामर्श देना ताकि विद्यार्थियों का शिक्षा के साथ–साथ एक अच्छे नागरिक के रूप में भी निर्माण हो सके।

विद्यालय का नाम : राजकीय उच्च विद्यालय, घरोरा

जिला : फरीदाबाद

मुख्याध्यापिका का नाम : श्रीमती अंजु रानी

विद्यालय का सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भ में

राजकीय उच्च विद्यालय, घरोरा ग्रामीण क्षेत्र में आता है। यहां से यमुना नदी मात्र 2.5 किलोमीटर दूर है। CRC होने के कारण 9 विद्यालय अतिरिक्त रूप से शामिल है। विद्यालय प्रबंधन समिति के द्वितीय चरण की बैठक में नई शिक्षा नीति पर प्रशिक्षण देने के माध्यम से यहां के गणमान्यों से रूबरू होने का पहली बार मौका मिला व लगा कि सभी का सहयोग मिलने से विद्यालय में ग्राम पंचायत द्वारा भी निर्माण कार्य कराए जा रहे हैं जिससे विद्यालय सुधार में काफी सहायता मिल रही है।

मुखिया के समक्ष चुनौतियाँ

1. सबसे पहली चुनौती थी एक CRC मुखिया की। CRC से प्रतिदिन भेजे जाने वाले आंकडे समय पर ना भेज पाना। CRC संबंधी स्टाफ का समय पर ना आना और कार्य में अरूचि रखना। जिसे विशेष आवश्यकता वाले छात्रों के प्रशिक्षण एवं शिक्षा कार्य में बाधा होती थी और उनके अभिभावक भी शिकायत लाते थे।
2. कोरोना के दौरान विद्यालय को दोबारा से खोलना व विद्यार्थियों के अभिभावकों को सन्तुष्ट करना भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। आज 80 प्रतिशत विद्यार्थी विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करने आ रहें हैं।

शुरुआती प्रयास/परिवर्तन की प्रक्रिया

सबसे पहले मिटिंग लेकर CRC स्टाफ को समय पर आने और कार्य में रूचि लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

परन्तु यह केवल एक प्रयास ही था। वास्तव में उनके उपस्थिति रजिस्टर को मुख्याध्यापिका कार्यालय में रखा गया जिससे उनके अन्दर एक भय का भाव आया। दिन में कई बार बिना सूचना के CRC के कार्य का

मुआयना किया गया जिससे स्टाफ एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी सचेत रहने लगे। मुख्याध्यापिका ने स्वयं बैठ कर कई दिनों तक प्रतिदिन भेजे जाने वाले आंकड़े तैयार करवाए और समय पर कार्य को नियम का रूप दिया।
विद्यालय में प्रतिदिन प्रातः 15 से 25 मिनट योगा एवं पी.टी. द्वारा विद्यार्थियों की 8 मास तक विद्यालय न आने के कारण हुई मानसिक तनाव से बाहर लाने का प्रयास किया जाता है जिससे वे कार्य करने को उत्साहित रहते है। पी.टी.आई. के द्वारा कबड्डी, खो–खो के खिलाडियों की टीमें तैयार करवाई जा रही है ताकि ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों को अपने विद्यालय व ग्राम को जिला एवं राज्य स्तर पर प्रतिनिधित्व करने का मौका मिल सकें। 10वीं के विद्यार्थियों के लिए प्रतिदिन अतिरिक्त कक्षाएँ लगाने के लिए अध्यापकों को कहा गया व उनको प्रोत्साहित किया गया, ताकि इस बार का परिणाम बेहतर हो सके। अध्यापकों को कक्षा में पहले पढ़ने व लिखने की कुशलता के लिए कार्य करने के लिए कहा गया फलस्वरूप विद्यार्थी अब अपने कार्यों में अधिक निपुण हो रहें हैं। बीच में पढ़ाई छोड़ के जाने वाले बच्चों की पहचान कर आंकडे सारणीबद्ध किए गए।

दृश्यमान परिणाम

विद्यालय का स्टाफ भी प्रातः होने वाली गतिविधियों में बच्चों के साथ मिलकर योगा करते है, जिससे कि सारा दिन सभी प्रसन्न व कार्य करने को उत्साहित रहते है। तीन ड्रापआउट का पुनः दाखिला किया गया है।
विद्यालय में अपूर्ण कला और शिल्प को आरंभ कराकर अगले स्तर की फाइल भेजी।

सुधार के लिए भविष्य की रणनितियाँ

विद्यालय का परिणाम शत प्रतिशत एवं नए स्तर में 100 प्रतिशत नामांकन के साथ छात्र संख्या भी बढ़ाना। नवाचार शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना।

निष्कर्ष

मुख्याध्यापिका और स्टाफ के मिले जुले प्रयासों से CRC की गतिविधियाँ एवं कार्य अब सुचारु रूप से चल रहा है। साथ ही कोविड़–19 के प्रभावों के रहते, अतिरिक्त कक्षाओं और अभिभावकों के सहयोग से शिक्षण कार्य को भी सुचारु कर लिया गया है। परन्तु इस स्थिति में शिक्षण को सुचारु रखना एवं चलाना चुनौतीपूर्ण है जिस पर प्रयास कार्यरत है।

विद्यालय का नाम : राजकीय कन्या उच्च विद्यालय अबूबशहर

जिला : सिरसा

मुख्याध्यापिका का नाम : श्रीमती उषा किरण

विद्यालय का सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भ

गाँव अबूबशहर में रहने वाले लोगों की संस्कृति मिश्रित है। अधिकतर लोगों की भाषा बागड़ी व कुछ पंजाबी भी है। काफी लोग खेती के व्यवसाय से जुड़े हुए है इसके अतिरिक्त सीमित पशुपालन, प्राइवेट नौकरी व कुछ लोग स्वरोजगार में भी लगे हुए है। मध्यम व उच्च वर्ग के लोग अपने बच्चों को निजी विद्यालयों में भेजते है, इस विद्यालय में लगभग सभी विद्यार्थी निम्न वर्ग से आते है और न ही उनमें शिक्षा के प्रति जागरूकता है, उच्च व मध्यम वर्ग के लोगों का स्कूल से कोई लेना–देना नहीं है, जबकि निम्न वर्ग के लोगों की विद्यालय के प्रति अधिक रूचि नहीं है। जातीय विविधता, बोली एवं संस्कृति की विविधता बहुतायत में है।

मुखिया के समक्ष चुनौतियाँ

राजकीय कन्या उच्च विद्यालय, अबूबशहर की भौतिक व आन्तरिक व्यवस्था बहुत ही उलझनों भरी व चुनौतीपूर्ण थी। पिछले सात वर्षों से विद्यालय भवन के नाम पर सिर्फ दो कमरे ही शेष है जो कमरे पहले थे उन्हें 7 वर्ष पहले जर्जर घोषित कर ध्वस्त किया जा चुका था। बचे हुए 2 कमरों में विद्यालय का सभी सामान, डेस्क, मेज, जिम का सामान, अलमारियां इत्यादि ठूस–ठूस कर भरी हुई थी। कम्पयूटर लैब का सभी सामान बांध कर रखा गया हैं व पिछले 7 वर्षों से एक भी विद्यार्थी कम्पयूटर सीखना तो दूर छू कर भी नहीं देख पाया है। जबकि रिकार्ड़ में पूर्ण कम्पयूटर लैब व कम्पयूटर टीचर कार्यरत थी। अधिकतर कक्षाएं बाहर खुले प्रांगण में लगाई जाती थी। जहां पर बन्दरों का आंतक हर समय रहता है। बन्दर बच्चों के बैग फाड़ देते हैं उनका सामान उठा ले जाते हैं व कई बार बच्चों को काट भी चुके हैं।

लड़कियों का स्कूल होने के कारण विद्यार्थियों की बार–बार अनुपस्थिति भी एक समस्या थी। अभिभावक लड़कियों की शिक्षा के प्रति जागरूक नहीं है, इसलिए छोटे–छोटे कार्यों के लिए उन्हें घर पर रख लेते हैं व कई बार पढ़ाई बीच में ही छुड़वा देते है। विद्यालय का बुनियादी ढांचे की व्यवस्था भी बिगड़ी हुई थी जैसे कि लम्बे समय से यहां कोई विकास कार्य नहीं हुआ हो।

शुरुआती प्रयास/परिवर्तन की प्रक्रिया

गाँव अबूबशहर की पंचायत प्रस्ताव द्वारा राजकीय कन्या उच्च विद्यालय की आई ग्रांट (कमरों की) को विभाग की अनुमति से गाँव के बाहर राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय अबूबशहर का विद्यालय भवन बना कर वहां शिफ्ट करके उस विद्यालय भवन को राजकीय कन्या उच्च विद्यालय को देना था, राजकीय कन्या उच्च विद्यालय को जो बाहर बिल्डिंग बनाकर दी उसमें अभी शिफ्ट नहीं किया गया और कन्या विद्यालय को अभी

तक बिल्डिंग नहीं मिल रही। इसलिए खण्ड शिक्षा अधिकारी व जिला शिक्षा अधिकारी को बार–बार पत्र भी लिखे गए थे, लेकिन अभी तक कोई हल नहीं मिला।

अब प्रयास द्वारा स्टाफ के साथ मिटिंग करके राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय अबूबशहर के इन्चार्ज (प्रिंसीपल) से भी भवन के लिए निवेदन किया। उच्चाधिकारियों की लिखित अनुमति न मिलने से पूर्ण रूप से बिल्डिंग तो उपलब्ध नहीं हो सकी। लेकिन स्कूल लाइब्रेरी, कम्पयूटर लैब व कुछ कक्षाओं के लिए शिक्षण कक्ष उपलब्ध करवा लिए है पूर्ण रूप से विद्यालय भवन की शिफ्टिंग हेतु अभी भी प्रयास जारी है।

कम्पयूटर लैब को भी संचालित करने के लिए कम्पयूटर उपकरणों को ठीक करवाना भी चुनौती था। इसके लिए सभी स्टाफ सदस्यों के स्वयं के व्यक्तिगत आर्थिक सहयोग से कार्य पूर्ण किया गया है।

लड़कियों की बार–बार अनुपस्थिति व ड्रापआऊट रोकने के लिए अधिकतर अनुपस्थित रहने वाले विद्यार्थियों के घर–घर जाकर सभी अभिभावकों को प्रेरित किया गया। नामांकन बढ़ाने के लिए सर्वेक्षण को पूरी निष्ठा के साथ पूरा किया गया। इतना सब कार्य स्टाफ के सहयोग से हो पाया इस विद्यालय में नियुक्ति के पश्चात् आने वाली सभी ग्रांट्स का भी विवेकपूर्ण इस्तेमाल करते हुए विद्यालय के बुनियादी ढांचे में सुधार किया गया है।

दृश्यमान परिणाम

विद्यालय में आने के पश्चात् लाइब्रेरी कक्ष, कम्पयूटर लैब व कक्षा कक्ष मिलने से व उन्हें संचालित किए जाने से विद्यार्थियों की विद्यालय में रूचि बढ़ी। विद्यार्थियों के ज्ञान में भी बढ़ोतरी हुई। कक्षा कक्ष मिलने से शिक्षण कार्य भी सुचारु रूप से संचालित होने लग गया है।

सुधार के लिए भविष्य की रणनितियाँ

राजकीय कन्या उच्च विद्यालय, अबूबशहर को राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय अबूबशहर के भवन में शिफ्ट करवाने के लिए उच्च अधिकारियों को पुनः लिखा जाएगा। भवन मिलने के बाद विद्यालय सौंदर्यीकरण को बढ़ावा दिया जाएगा। लैब आदि को स्थापित किया जाएगा। फूल व पेड़ पौधे लगाकर विद्यालय को आर्कषक बनाया जाएगा। गणित पार्क, विज्ञान पार्क विकसित किए जाऐंगे। बालिकाओं की शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ाने व उनकी समस्याओं के निदान के लिए बालिका मंच कक्ष की भी व्यवस्था की जाएगी और विद्यालय में खेल व सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया जाएगा।

निष्कर्ष

चुनौतियों से भाग जाना आसान होता है लेकिन फिर भी समस्याए पीछा नहीं छोड़ती इससे बेहतर है चुनौती स्वीकार कर भाग लिया जाए अर्थात् उसका सामना किया जाए। हालांकि मेरी रिटायरमैंट में केवल 2 महीने ही शेष रह गए हैं लेकिन मेरी इच्छा है कि सेवाकाल के अन्तिम दिन उपरोक्त वर्णित चुनौतियों को स्वीकार किया जाए और स्कूल प्रांगण तथा स्कूली शिक्षा व शिक्षण को और अधिक बेहतर बनाया जाए। गाँव, समुदाय, पंचायत, स्टाफ व विद्यार्थियों के सहयोग से शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में वांछित सुधार लाने तक प्रयासरत रहा जाए। बहुत सी समस्याएं सुलझ गई है। शेष समस्याओं को भी पूरे मन से हल करने के लिए प्रयासरत रहने का संकल्प क्योंकि –

''जिन्दगी के कई इम्तिहान अभी बाकी है, हौंसलों की असली उडान अभी बाकी है
अभी तो नापी है मुट्टी भर जमीन हमने, अभी तो सारा आसमान बाकी है।''

विद्यालय का नाम : राजकीय कन्या उच्च विद्यालय हाब्डी

जिला : कैथल

मुख्याध्यापक का नाम : श्री हरीशचन्द्र

मो. न. 9416227473

संक्षेप

विद्यालय एक ऐसी सामुदायिक संस्था है जो समाज के नव निर्माण और भावी पीढ़ी को नया सपना देने का पवित्र कार्य करती है। इसका मूलाधार है – बच्चों, अभिभावकों और विद्यालय के पूरे स्टाफ का सामूहिक प्रयास। यह अध्ययन राजकीय कन्या उच्च विद्यालय हाब्डी – 2259 ब्लॉक पुण्डरी, जिला कैथल का है। यह विद्यालय 1961 में प्राथमिक विद्यालय के रूप में स्थापित हुआ। 1981 में 20 वर्ष बाद यह उच्च विद्यालय के रूप में स्थापित हुआ।

विद्यालय का सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भ

यह विद्यालय बिल्कुल गाँव से सटकर है। विद्यालय में सभी जाति व धर्मों के बच्चों को निडर और निष्पक्ष शैक्षिक वातावरण प्रदान किया जाता है। सभी बच्चे बहुत ही सहिष्णुता व भाई चारे से रहते हैं। समय–समय पर सभी बच्चे विभिन्न सांस्कृतिक अवसरों पर कार्यक्रमों में खूब भाग लेते हैं। वह चाहे स्वतंत्रता दिवस हो, गणतंत्र दिवस हो या फिर गाँधी जयन्ती हो। इन अवसरों पर बच्चों और अध्यापकों का उत्साह व रूचि देखने योग्य होती है। इन अवसरों पर SMC और अभिभावकों का सहयोग भी निरन्तर उत्सावर्द्धक रहता है। MDM के तहत बच्चों को राशन भी साफ–सुथरा सरकारी निर्देशानुसार समय पर वितरित किया जा रहा है। विद्यालय का एक ही ध्येय बच्चों के सामाजिक व मानसिक विकास के साथ–साथ बच्चों के सामाजिक व सांस्कृतिक सरोकारों व संवेदनाओं का परिष्कार है।

मुखिया के समक्ष चुनौतियाँ

यहां कार्य ग्रहण करने के बाद विद्यालय के बाह्य व आंतरिक परिवेश और प्रचलित कार्य पद्धति को गहनता से जांचा–परखा। तब कुछ तथ्य, चुनौनियों की तरह ध्यान में आए। उस विद्यालय का बहुत सारा रिकार्ड़ गुम और आधा–अधूरा था। दूसरा, विद्यालय का वार्षिक परिणाम काफी पिछड़ा था। तीसरा, विद्यालय में छात्राओं की उपस्थिति और अनुशासन में गुणात्मक सुधार की महत्ती आवश्यकता थी। स्टाफ के पूरी लगन से कार्य करने के बाद भी अपेक्षित परिणाम व अनुशासन स्थापित नहीं हो पा रहा। विद्यालय बहुत नीचे (झील में) है, इसके ठीक सामने सड़क है जिसका लेवल स्कूल से काफी ऊँचाई पर है। स्कूल के पिछले हिस्से की तरफ काफी बड़ा जोहड़ (तालाब) है। वर्षा के दिनों में तालाब का गंदा पानी विद्यालय प्रांगण में घुस आता है। हालांकि

पंचायत से इस विषय में चर्चा की तो भी उनका प्रत्युतर निराशाजनक ही रहा। छात्र संख्या के हिसाब से प्रांगण बहुत ही छोटा है। अतः खेलने के लिए बच्चों को उपयुक्त और पूरी जगह नहीं मिल पा रही है।

शुरुआती प्रयास/परिवर्तन की प्रक्रिया

कई बार उच्च अधिकारियों और स्टाफ सदस्यों से विचार विर्मश किया और भावी योजना को क्रियान्वित किया। पूरे स्टाफ को विश्वास में लिया। पूरे रिकार्ड़ को खंगाला और जहां कही भी चूक थी उसे तुरन्त दुरस्त किया। परिवार पहचान पत्र के लिए अध्यापक निर्धारित किए। नष्ट या गुम हुए रिकार्ड़ के बारे में उच्च अधिकारियों को अवगत कराया। कुछ रिकार्ड़ नए सिरे से लिखवाकर तैयार करवाया गया। बच्चों के अनुशासन और उपस्थिति को लेकर अभिभावकों से निरन्तर संवाद किया। छात्रों के शैक्षिक परिणामों में सुधार लाने के लिए समय–सारणी में आवश्यक परिवर्तन किए गए। अध्यापकों से समय–समय पर छात्रों के विषय में सूचना ली गई। मुख्याध्यापक ने समय–समय पर स्वयं कक्षाएँ भी ली और सभी अध्यापक छात्रों की शिक्षा पर ध्यान दे रहे हैं ये सुनिश्चित किया।

दृश्यमान परिणाम

प्रयासों के अनुरूप देखने में आया कि विद्यालय का परिणाम 85 प्रतिशत तक आ गया। आज कमरों में पंखों और टयूबलाइटों की उचित व्यवस्था है। बच्चों का शौचालय साफ–सुथरा है। पुराना रिकार्ड़ एक दम सही जगह व तुरन्त उपलब्ध है। परिवार पहचान पत्र का कार्य 100 प्रतिशत पूरा हो चुका है। बच्चों की उपस्थिति में बहुत अधिक सुधार है। विद्यालय का अनुशासन देखने योग्य है।

सुधार के लिए भविष्य की रणनितियाँ

विद्यालय का परिणाम 100 प्रतिशत लाने के साथ ही सांस्कृतिक गतिविधियों जैसे खेल, विज्ञान और कला के क्षेत्रों में कुछ श्रेष्ठ उपलब्धियाँ हासिल करना भी भविष्य का एक उद्देश्य होगा। विद्यालय में दिन–प्रतिदिन व नियमित होने वाली गतिविधियों को और अधिक विश्वसनीय और अनुशासित ढ़ंग से क्रियान्वित करना तथा बच्चों को स्वच्छ वातावरण देना हमारा एक उद्देश्य है, ताकि वे श्रेष्ठ और आदर्श नागरिक बनकर समाज में अपनी पहचान बनाएँ।

निष्कर्ष

मुख्याध्यापक सहित पूरा स्टाफ विद्यालय की प्रगति और बच्चों के चहुँमुखी विकास के लिए कृत संकल्प है। स्टाफ और अभिभावकों के सहयोग से विद्यालय का परिणाम 100 प्रतिशत लाने के साथ ही स्कूल रिकार्ड़, अनुशासन आदि की बेहतरी के लिए सदैव प्रयासरत है।

विद्यालय का नाम : राजकीय उच्च विद्यालय ढाणी, रायपुर

जिला : हिसार

मुख्याध्यापक का नाम : श्री रामनिवास

जब मुख्याध्यापक विद्यालय में कार्य ग्रहण करने पहुंचे तो विद्यालय का मुख्य द्वारा सड़क से लगभग तीन फुट गहरा दिखाई दिया। अहसास हुआ कि यह कार्य करवाना अति आवश्यक है। इसके बाद मैं विद्यालय के मुख्य अध्यापक कार्यालय की तरफ बढ़ा तो कुछ कमरे बेकार हो चुके थे। उनकी हालात देखकर मन में विचार आया कि ये अब तक टूट जाने चाहिए थे और नए कमरे बन जाने चाहिए थे।

स्टाफ के साथ बैठक में बात हुई कि कई कमरे खराब हालत में हैं। नए कमरों की संख्या कम है। एक अध्यापिका ने बताया कि सुधार के बारे में बातें तो होती रहीं हैं लेकिन सुधार नहीं हो पाया। इसका मुख्य कारण पता चला कि काफी समय से मुख्य अध्यापक यहां पर रुक नहीं पाए।

ऐसा नहीं कि विद्यालय में कुछ भी अच्छा दिखाई नहीं दिया। कई चीजें बहुत अच्छी भी दिखाई दीं।

1. विद्यालय में हरियाली बहुत अच्छी थी। पेड़ पौधों की देखरेख अच्छी थी।
2. पीने योग्य पानी व सिंचाई की व्यवस्था अच्छी थी।
3. मुख्य अध्यापक कार्यालय व चार कक्षा कक्ष अच्छी स्थिति में दिखाई दिए।
4. छात्र व छात्राओं के लिए शौचालयों की व्यवस्था अलग अलग थी।
5. MDM kitchen garden बहुत ही अच्छा था।
6. विद्यालय का स्टाफ मेहनती व मिलनसार देखकर बड़ा अच्छा लगा।

विद्यालय के सामाजिक व सांस्कृतिक संदर्भ में

यह विद्यालय ढाणी व रायपुर दो गाँव के बीच में हिसार से खरड़ जाने वाली सड़क पर स्थित है। इन दोनों गाँव में छोटे किसानों व मजदूरों की संख्या अधिक है। मिस्त्री भी काफी है। बताया जाता है कि प्रथम विश्व युद्ध के दौरान 1914 में यह गाँव बसा हुआ है। विद्यालय में अनुसूचित जाति वर्ग के बच्चों की संख्या अधिक है। कक्षा 6 से 10 तक छात्र संख्या 192 है। लड़कियों की संख्या लड़कों से ज्यादा है।

मुखिया के समक्ष चुनौतियां

क). विद्यालय के जर्जर कक्षों को कंडम घोषित करवाना व तुड़वाना

ख). चारदीवारी की मरम्मत करवाना व ऊंचाई बढवाना।

ग). खेल के मैदान में मिट्टी डलवाना व इंटरलॉक लगवाना।

घ). सूखकर गिरे हुए पेड़ों की कटाई व नीलामी करवाना।
ङ). सभी बच्चों को ऑनलाइन शिक्षा की धारा में शामिल करना।

उपरोक्त चुनौतियों का सामना करने के लिए राशि की आवश्यकता थी जो कि अभी उपलब्ध नहीं थी। आपसी विचार–विमर्श के बाद निष्कर्ष यह निकला कि एसएमसी सदस्यों, ग्राम पंचायत व कुछ गणमान्य व्यक्तियों की मीटिंग बुलाई जाए। मीटिंग बुलाई गई। सभा में उपस्थित सदस्यों के सामने समस्याएं रखी गई। एक एक समस्या के समाधान पर विचार किया गया।

शुरुआती प्रयास

1. सूखे हुए पेड़ों को कटवाने हेतु वन विभाग से आज्ञा लेने की सहमति बनी।
2. सूखकर गिरे हुए पेड़ जो साफ–सफाई व अन्य गतिविधियों में बाधा डाल रहे थे उनको एकांत में एकत्रित करवाया जाना तय हो गया।
3. विद्यालय की फ्रंट वाली दीवार के साथ लोगों ने कूड़े करकट के ढेर लगाए हुए थे उनको कूड़ा डालने से रोका गया। कूड़ा करकट उठाने का 80 प्रतिशत कार्य पंचायत को साथ लेकर करवा दिया गया
4. ऑनलाइन शिक्षा को सुचारू रूप से चलाने के लिए स्टाफ के साथ बैठक में तय किया गया कि सभी शिक्षकों में बच्चों को लगभग बराबर–बराबर बांटा जाए। प्रत्येक अध्यापक अपने हिस्से में आए बच्चों की समस्याओं का समाधान करेगा। अध्यापकों की ड्यूटी लगाई गई कि वे बच्चों के घरों का दौरा करें और जिन बच्चों के पास स्मार्ट फोन नहीं थे उनको दूसरों के साथ जोड़ने का काम करें। अध्यापकों ने दो–दो बच्चों के जोड़े बनाकर क्विज प्रतियोगिता व सेट में होने वाली पूरी प्रक्रिया के बारे में बच्चों को ट्रेंड किया।
5. मनरेगा स्कीम के तहत पंचायत के माध्यम से खेल के मैदान में मिट्टी भरत, चारदीवारी की मरम्मत व इंटरलॉकिंग टाइल्स लगवाने हेतु एस्टीमेट बनवा कर जिला मौलिक शिक्षा अधिकारी को भेजा गया।
6. हल्की सी बारिश से ही विद्यालय के मुख्य द्वार पर कीचड़ हो जाने से आवागमन में बाधा होती थी। इस समस्या के निवारण के लिए इंतजार नहीं किया जा सकता था। परंतु समस्या के समाधान के लिए राशि उपलब्ध नहीं थी। इसके निवारण के लिए सरपंच से कहकर मिट्टी डलवाई गई व विद्यालय से राशि खर्च करके रेंप बनाया गया जो अति आवश्यक था।

7. कुछ ड्यूल डेस्क खराब हालत में थे इन्हें ठीक करवाकर उपयोग लायक बना लिया गया है।
8. विद्यालय का सारा स्टाफ मेहनती था परंतु आपसी सहयोग की कमी लगी जिसे दूर करना मुख्याध्यापक लिए एक चुनौती थी इसलिए मैंने प्रत्येक सदस्य को अलग–अलग अपने पास बुला कर उससे बात की वह उसकी समस्याओं को सुना अपनी तरफ से उसे आश्वासन दिया कि प्रत्येक कार्य में उसे मेरा व्यवस्था के प्रत्येक सदस्य का सहयोग मिलेगा इसके अतिरिक्त मैंने प्रत्येक अध्यापक को यह कहा कि मुझे सारे स्टाफ ने यह कहा है कि आप इस विद्यालय के सबसे कर्मठ अध्यापक हैं विद्यालय के सभी कार्यों को अध्यापकों में बराबर बांट गया। इससे सभी अध्यापक एक दूसरे के निकट

आ गए वह सभी ने अच्छे से कार्य करने का प्रयास किया। आज विद्यालय का ही नहीं पूरी सीआरसी का स्टाफ एकजुट होकर मेरे साथ खड़ा है।

9. विद्यालय में एक समस्या गणित अध्यापक की थी आठवीं कक्षा तक तो साइंस अध्यापिका गणित पढ़ा लेती थी परंतु मेडिकल साइड से होने के कारण नौवीं व दसवीं कक्षा पढ़ाना काफी कठिन था मैंने इस संदर्भ में एक एप्लीकेशन परम आदरणीय जिला शिक्षा अधिकारी श्री जोगिंदर सिंह हुड्डा जी को लिखी वैसा मैं उनसे जाकर मिली वह प्रार्थना की कि डाइट बिस्वामिल से एक प्राध्यापक को विभिन्न विद्यालयों में भेजा गया है। हमारे विद्यालय में भी एक गणित का प्राध्यापक भेजने की कृपा करें जिला शिक्षा अधिकारी ने मेरा अनुरोध ध्यान से सुना व सहयोग का पूरा आश्वासन दिया इसके एक सप्ताह के पश्चात ही गणित और प्राध्यापिका कि विद्यालय में आंतरिक व्यवस्था कर दी गई।
10. विद्यालय का भवन अच्छा बना होने के बावजूद उसे मरम्मत की आवश्यकता थी वर्षा होने पर मुख्य अध्यापक कक्ष में ही पानी आता था। सभी एसएमसी सदस्यों व पंचायत के सदस्यों की बैठक बुलाई गई और उन्हें समस्या से अवगत कराया गया। विद्यालय में रिपेयर मेंटेनेंस की ग्रांट आई हुई थी सर्वसम्मति से यह फैसला लिया गया कि छत की मरम्मत करवाई जाएगी वह मुख्याध्यापक कक्ष में पेंट करवाया जाएगा विद्यालय में और भी मरम्मत की जहां आवश्यकता थी करवाई जाएगी इसके लिए पंचायत ने भी विद्यालय को दान देकर सहयोग किया फेस लिफ्टिंग की ग्रांट के विषय में भी उन्हें जानकारी दी गई। उस कार्य को भी अच्छी प्रकार से पूर्ण करवाया गया।

11. ऑनलाइन टीचिंग में भी काफी समस्या आ रही थी विद्यार्थियों के पास स्मार्टफोन नहीं है मैंने अध्यापकों को प्रोत्साहित किया कि वे दो या तीन सदस्यों के ग्रुप बनाकर गाँव में सर्वे करें वह जिन विद्यार्थियों के पास स्मार्टफोन नहीं है उनके शिक्षा मित्र बनवाएं ताकि उनकी पढ़ाई सुचारू रूप से चल सके।
12. विद्यालय में खेल के मैदान में घास बड़ी हो गई थी। एमडीएम कुक को बुलाकर उन्हें समझाया कि बच्चे हम सभी के हैं अगर यहां खेलते हुए किसी बच्चे को किसी कीड़े ने काट लिया तो हम अपने आप को कभी माफ नहीं कर पाएंगे यह सुनते ही उन्होंने सारी घास काट ग्राउंड साफ कर दिया।

दृश्यमान परिणाम

किए गए इस हल्के से प्रयास से मुख्य द्वार के खुलने व बंद होने की समस्या समाप्त हो गई। परिवहन व बच्चों का आवागमन सुगम हो गया। सभी ने इस कार्य की सराहना की।

सुधार हेतु भविष्य की रणनीतियां

1. बेकार कमरों व बरामदों को कंडम घोषित करवाने हेतु फाइल उच्चाधिकारियों को उचित माध्यम सेभेज दी गई हैं।

2. वर्तमान आवश्यकता को देखते हुए विद्यालय में एक स्मार्ट क्लासरूम बनवाने का प्रयास किया जाएगा।

निष्कर्ष

प्रगति का रास्ता हमेशा ही चुनौतियों से भरा होता है। चुनौती से डरकर पीछे भागना ठीक नहीं है। समय का बहाना बनाकर किसी कार्य को आरंभ ही ना करना समझदारी नहीं है। अगर कार्य आरंभ होगा तो पूरा भी होगा। हमारे स्थानांतरित या सेवानिवृत्त हो जाने से विद्यालय बंद नहीं होंगे और न हीं कार्य रुकेंगे। मैं अपने बारे में आश्वासन देता हूं कि मैंने कार्य आरंभ कर दिया है व इसे जारी रखूंगा। अपने इरादों से इसे पूरा करने का भरसक प्रयास करूंगा।

सीआरसी के सभी विद्यालय प्रमुखों को विद्यालय में बुलाकर उन्हें आश्वासन दिया कि उनका सीआरसी का कोई भी कार्य या वेतन कभी लेट नहीं होगा आप अपनी पूरी क्षमता से विद्यालय सुधार के लिए कार्य करें आज पूरी सीआरसी एकजुट होकर खड़ी है एवं कार्य कर रही है।

भविष्य में अभी चुनौतियां और भी है विद्यालय में बने हाल की रिपेयर करवाना विद्यालय में वाइटवॉश करवाना। स्टाफ की सहायता से छात्र–छात्राओं को शिक्षा के प्रति जागरूक करना। विद्यालय में छात्रों की संख्या बढ़ाना और इन सबसे ऊपर बच्चों व अध्यापकों का समय पर विश्वास जगाना कि वह सब कुछ पा सकते हैं जो वे चाहते हैं तभी सही मायने में विद्यालय शिक्षा का मंदिर बनेगा।

विद्यालय का नाम : राजकीय उच्च विद्यालय बोहर

जिला : रोहतक

मुख्याध्यापिका का नाम : श्रीमती वीना

विद्यालय का सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश

हमारा विद्यालय शहर के नजदीक होने के कारण उत्तरप्रदेश, बिहार के प्रवासी बच्चे ज्यादा है जिनको हरियाणा के हिसाब से बातचीत व पहनावा सिखाना भी बहुत बड़ा कार्य है।

मुख्याध्यापक के समक्ष चुनौतियां

प्रवासी बच्चे एक बार गाँव चले जाए तो वापिस जल्दी से नहीं आते। अध्यापक को बार–बार फोन करने को कहा जाता है और जो कोरोना में गाँव के बच्चे नहीं आते उसके लिए अध्यापकों के समूह गाँव में जाते है (जो अध्यापक उसी गाँव के है उनको भेजा जाता है) और मैं भी अभिभावकों को फोन पर सलाह देती हूँ कि बच्चों को विद्यालय भेजने के बहुत फायदे है। कोरोना पर नियंत्रण हो गया है अब आगे देखो और बच्चों को भेजो। एक समस्या सहशिक्षा स्कूल की भी आती है। अभिभावक अपनी बच्चियों को सहशिक्षा स्कूल में नहीं भेजना चाहते।

शुरुआती प्रयास

कई बार बच्चे अपने धर्म और अपने गुरुओं के प्रति बहुत Sensitive होते है। मैं अंतिम स्कूल की बात बताना चाहती हूँ कि एक अध्यापक ने बच्चे से अनुपस्थित रहने का कारण पूछा तो बच्चे ने कहा कि हम अपने गुरु के पास चले गए थे। अध्यापक ने इतना ही कहा कि गुरु ने ये तो नहीं कहा कि पढ़ों मत। उसी समय वो बच्चा घर भाग गया और अपने घरवालों को लेकर अध्यापक की F.I.R. करवाने गया। पुलिस भी आई पंचायत भी आई, 30 सदस्यों के आगे उस अध्यापक को माफी मांगनी पड़ी। हम अध्यापक दूर से देख रहे थे उस अध्यापक को माफी मांगते देख हम सभी भावुक हो गए।

अध्यापकों से सर्वेक्षण करवाया गया ताकि अभिभावकों के मन से सहशिक्षा का डर निकलवाया जा सके। हम इनके अभिभावकों की तरह ही है जैसे घर में भाई–बहन रहते हैं ऐसे ही बच्चे स्कूल में रहते हैं। अभिभावकों और बच्चों को इतना प्रोत्साहित किया जाता है कि अभिभावक अपनी बेटियों को भी स्कूल भेज रहे हैं और सभी बच्चे स्कूल का फायदा उठा सके।

परन्तु यह प्रोत्साहन कार्य निरन्तर चलना अति आवश्यक महसूस होता है। समय–समय पर अध्यापकों को अभिभावकों को आश्वासन दिलवाना पड़ता है कि उनकी बेटियाँ सहशिक्षा में सुरक्षित है और इस आश्वासन के तहत विद्यालय के माहौल को भी उपस्थित समाज के अपेक्षाओं के अनुरूप रखने के प्रयास किए जाते है।

विद्यालय से छुट्टी के बाद जब छात्राएँ घर के लिए जाती है तो मुख्य द्वार के अन्दर एवं बाहर विद्यालय के अध्यापकों की ड्यूटी लगाई जाती है और उनका सुरक्षित घर पहुँचना सुनिश्चित किया जाता है ताकि अभिभावकों का विद्यालय के प्रति विश्वास बना रहे।

छात्रों को भी समय–समय पर इस विषय की गंभीरता से अवगत करवाया जाता है। बालकों को किसी भी प्रकार की छेड़छाड या भावनात्मक संबंधों से दूर रहने को प्रोत्साहित करते हुए बताया जाता है कि उनका इस तरह का व्यवहार बालिकाओं की शिक्षा को क्षति पहुँचा सकता है।

यह कार्य जितना आसान लिखना महसूस होता है उतना ही कठिन इसका क्रियान्वयन है जिसे निरन्तर चलाते रहना ही बालिकाओं को सहशिक्षा से जोड़े रखने का एक मात्र साधन है।

भविष्य की रणनीतियाँ

मुख्याध्यापिका का कार्यकाल समाप्ति की ओर है। परन्तु मुख्याध्यापिका समाज के धर्म और गुरूओं में रखने वाले अंधविश्वास और शिक्षा पर पड़ रहे दुरप्रभाव से बहुत चिन्तित है। इसी दिशा में मुख्याध्यापिका, विद्यालय के स्टाफ को इस समस्या के समाधान के मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन देकर इस समस्या के समाधान की पृष्ठभूमि तैयार करवाना चाहती है ताकि समाज के लोग अपनी आध्यात्मिक आस्था एवं शिक्षा के महत्त्व को समझ सके।

निष्कर्ष

अपने काम के प्रति 100 प्रतिशत दे तो कोई काम असंभव नहीं है। अध्यापक में भेदभाव नहीं करना चाहिए। सबको समान कार्य देना चाहिए। उनके रूचि को देखकर अतिरिक्त कार्य देना चाहिए। प्रार्थना में बच्चों को प्रोत्साहित भाषण जरूर सुनानी चाहिए, भाषण का अध्यापक पर भी असर पड़ता है। पहले खुद के व्यक्तित्व को विकसित जरूर करना चाहिए। सक्रिय और तीव्रबुद्धि होंगे तो अध्यापक व बच्चों पर असर पड़ेगा।

विद्यालय का नाम : राजकीय उच्च विद्यालय कनौह

जिला : हिसार

मुख्याध्यापक का नाम : श्री रामप्रसाद

विद्यालय का सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश

राजकीय उच्च विद्यालय कनौह ग्रामीण क्षेत्र में स्थित है जिसमें छात्र–छात्राओं को एक साथ पढ़ाया जाता है अर्थात् यह सहशिक्षा विद्यालय है। जिसमें आर्थिक रूप से कमजोर ग्रामीणों के बच्चे आते हैं। बच्चों के अभिभावकों का व्यवसाय खेती–बाड़ी या मजदूरी है। अधिकतर बच्चों के माता–पिता कम पढ़े लिखे होने व समय के अभाव से बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान कम दिया जाता है।

मुखिया के समक्ष चुनौतियाँ

1. कोरोना के दौरान अध्यापकों द्वारा ऑनलाइन कार्य दिया जाना, जिससे अधिकतर बच्चों के पास मोबाइल न होने के कारण अध्यापन कार्य पूरा न होना।
2. बच्चे मोबाइल के द्वारा पढ़ाई के साथ–साथ अन्य घटनाएँ भी देखते है जिससे उनके चरित्र पर पूरा प्रभाव पड़ता है।
3. अवसर ऐप, उम्मीद ऐप, शिक्षा मित्र आदि की पूर्ण जानकारी न होना।
4. मोबाइल का रिचार्ज व इंटरनेट न होने के कारण पढ़ाई में बाधाएँ आना।
5. कोरोना के कारण लॉकडाउन में बच्चों का ध्यान पढ़ाई की तरफ कम होने के कारण पहले की अपेक्षा बच्चे पढ़ाई में कमजोर हुए।
6. विद्यालय नियमित लगने के कारण सर्वांगीण विकास में बाधा जैसे – खेलकूद, सांस्कृतिक गतिविधियां आदि।
7. जिन बच्चों के पास मोबाइल की उपलब्धता थी उन बच्चों में, मोबाइल के अधिक प्रयोग से तनाव ग्रस्त होना।
8. ऑनलाइन से लेखन–कौशल में कमी आना।
9. अभिभावकों में कोरोना की वैक्सीन आने पर भी भ्रम की स्थिति बनी हुई थी।
10. ऑनलाइन पर SMC सदस्यों व अभिभावकों की संख्या कम रहने पर प्रेरित करने की समस्या बनी रहना।
11. क्वीज प्रतियोगिता में भागीदारी कम रहना। परीक्षा परिणाम 100 प्रतिशत बनाना।
12. सरकार और विभाग की योजनाओं को सुचारु रूप से लागू करना।

प्रयास व समाधान

समस्त स्टाफ की एक बैठक, कोरोना के बचाव के नियमों को ध्यान में रखते हुए आयोजित की गई। जिसमें बच्चों के पढ़ाई के स्तर, योगासन, सांस्कृतिक कार्यक्रम व सर्वांगीण विकास करने की ओर ध्यान रखने को कहा गया तथा पूर्ण प्रयास करने की प्रेरणा दी गई। SMC, P.T.A. की बैठक करके बच्चों का ध्यान पढ़ाई की ओर देने के लिए कहा क्योंकि सबसे बड़ी पूंजी बच्चे ही होते हैं जिससे देश, माता–पिता, गाँव आदि का नाम रौशन होता है। अभिभावकों को प्रेरित किया गया कि कोरोना के कारण उपरोक्त सभी समस्याओं को ध्यान में रखते

हुए होने वाली कमी को पूरा करने का प्रयास व आश्वासन दिलवाया गया। बच्चों की हाजरी 100 प्रतिशत करना, क्वीज प्रतियोगिता में भाग लेना, अवसर व उम्मीद ऐप डाउनलोड़ करवाया गया और सुझाव दिया गया कि बच्चे जब मोबाइल पर काम करते हैं तो ध्यान रखे तथा जो बच्चा पढ़ता है उसे भी साझा करने की आदते डाले ताकि बच्चा निर्भिक होकर शिक्षा ग्रहण करें। अभिभावकों को सुझाव भी दिए कि घर पर बच्चा कार्य करता है उसे लिखकर भी देखे ताकि लेखन कार्य अच्छा हो सके इसी के साथ अध्यापकों को भी सुझाव दिया गया कि लिखित कार्य करवाया जाए तथा बच्चों में अपने विचारों की आदान–प्रदान की आदते डालें। जिसका परिणाम बच्चों की शिक्षा के प्रति बढ़ती रूचि के रूप में दिखाई दिया।

भविष्य की रणनीतियाँ

नामांकन 100 प्रतिशत करना, हाजरी 100 प्रतिशत करना, शिक्षण कार्य प्रभावी बनाना, परीक्षा परिणाम 100 प्रतिशत लाने का पूर्ण प्रयास, खेलकूद सांस्कृतिक, विज्ञान–प्रदर्शनी, योगासन आदि में भाग लेने के लिए प्रेरित करना, वातावरण को साफ सुथरा रखना, MDM वितरण प्रणाली को नियमित रूप से करना व बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए पूरी लगन से ईमानदारी से काम करना। विद्यालय का रखरखाव व विद्यालय का रिकार्ड़ स्टाफ के सहयोग से पूरा करवाना।

निष्कर्ष

उपरोक्त सभी योजनाएँ सभी मेहनती, कर्मठ और ईमानदार स्टाफ के सदस्यों को साथ लेकर उपरोक्त सभी कार्यों को ईमानदारी से पूरा करने का प्रयास तथा भविष्य में आने वाली चुनौतियों को दूर करने का की आशा है।

विद्यालय का नाम : राजकीय उच्च विद्यालय कम्बोपुरा

जिला : करनाल

मुख्याध्यापिका का नाम : श्रीमती सुनीता शर्मा

विद्यालय के सामाजिक व सांस्कृतिक सरोकार

मुझे राजकीय उच्च विद्यालय कम्बोपुरा, करनाल में सितम्बर मास से सेवाएँ देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरा विद्यालय नगर निगम के अन्तर्गत आता है। यद्यपि मेरे विद्यालय का भवन बहुत सुन्दर है परन्तु यहाँ पर बन्दरों का बहुत आतंक था। हर समय किसी नुकसान की आशंका रहती थी। कार्यग्रहण करते ही मैंने नगर निगम कमेटी से सम्पर्क किया तथा उन्हें अपने विद्यालय की समस्या से अवगत कराया। तब कमेटी सदस्यों के सहयोग से बन्दरों को पकड़कर गाँव से बाहर दूर जंगल में छोड़ कर विद्यालय परिवेश को भयमुक्त करवाया।

यह विद्यालय सहशिक्षा अर्थात् छात्र–छात्राएँ दोनों ही मेरे विद्यालय में आते है। ऑनलाइन P.T.A. बैठक के दौरान अभिभावकों से बात करते हुए उनके मन में लड़कियों के दूर से आने के प्रति आशंका है उसके लिए उन्हें आशान्वित करते हुए विभाग में छात्राओं के लिए आवागमन की व्यवस्था करवाई गई।

मुख्याध्यापक के समक्ष चुनौतियां एवं प्रयास

1. सभी स्टाफ सदस्यों की समय–समय पर बैठक बुलाकर बच्चों की ऑनलाइन पाठ्यक्रम सामग्री को रूचिकर बनाने के सुझाव दिए ताकि कोरोना के दौरान हुई क्षति की पूर्ति की जा सके। विद्यालय के स्मार्ट कक्षाकक्ष में भी बच्चों को वीड़ियों दिखाकर रूचिपूर्ण तरीके से समझाया गया। स्टाफ सदस्यों तथा छात्रों को व्हाट्सअप के माध्यम से ऑडियो में संदेश भेजे गए ताकि सभी छात्र अवसर ऐप में भाग ले सके। उम्मीद ऐप के बारे में बच्चों को समझाया गया ताकि वे उसका अधिकाधिक लाभ ले सके। सभी अध्यापकों द्वारा भी अवसर सक्षम तथा समीक्षा ऐप पर रजिस्ट्रेशन करवाया गया।
2. विद्यालय में बालिका मंच तो था परन्तु सिर्फ कागजों तक ही। उसे भी सक्रिय करवाया गया तथा छात्राओं को प्रोत्साहित करते हुए उन्हें Good touch व Bad touch की जानकारी दी गई तथा उन्हें यह भरोसा दिलाया गया कि सभी स्टाफ सदस्य हर समय उनकी किसी भी समस्या को दूर करने के लिए प्रस्तुत है।

3. विद्यालय में आई Face lifiting grant का सदुपयोग करवाया गया ताकि अधिक से अधिक छात्र उससे विभिन्न जानकारी देते हुए नक्शे, अंग्रेजी, गणित तथा हिन्दी के विभिन्न फार्मूले दिवारों पर सुन्दर ढ़ंग से बनवाए गए। इसके अलावा सड़क सुरक्षा चिन्हों की जानकारी भी दी गई तथा Pocso Act की जानकारी उपलब्ध करवाते हुए उससे संबंधित बोर्ड़ बनवाया।
4. विद्यालय में शैक्षणिक तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा दिया गया तथा छात्रों की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करवाया गया। विद्यालय में कानूनी साक्षरता, गणतंत्र दिवस, विज्ञान प्रदर्शनी, प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा SMC कार्यकर्ताओं की बैठक भी बुलाई गई।
5. विद्यालय की धूल से लथपथ पुस्तकालय को सुनियोजित करवाकर छात्रों के लिए उपलब्ध करवाया गया ताकि उनमें पढ़ने की आदत का विकास हो सके।
6. पीने के पानी का क्लोरीनेशन करवाकर स्वच्छ करवाया गया। विद्यालय में शौचालय तो थे परन्तु Hygiene का ध्यान नहीं था। विद्यालय परिसर को सेनीटाइज करवाकर तथा शौचालयों में भी समुचित व्यवस्था की गई जिससे कि छात्रों में संक्रमण का डर न हो।

निष्कर्ष

अन्त में यही कहना उचित होगा कि लीक से हटकर जब भी किसी ने कुछ करने की कोशिश की है तो उसे समस्याओं का सामना करना पड़ा है परन्तु समय तथा आवश्यकतानुसार सभी समस्याओं का समाधान करने की कौशिश करना व्यक्ति का उद्देश्य होना चाहिए।

Name of School – GHS Chhapra Bibipur (3917)
District – Mahendergarh
Name of Headmistress – Smt. Santosh Devi
Mobile: 9896134218

Social and Cultural Aspects of School

The school was established in 1954 as Primary School, upgraded as Middle School in 1981 and attained its present status of High School in 1991. The school is situated in Gujjar dominating area, where education is least considered specially the girls education. Some social evils of ancient society like Child Marriage, Alcoholism and disrespectful conditions of women are still prevalent.

Challenges before Head of Institution

Before the joining school Headmistress was informed by former DDO Mr. Ashok Kumar (Lect. Eng.) that the main problem in the school is student attendance & low student enrolment.

Efforts Initiated / Transformation Process

As per the information provided by former DDO Mr. Ashok Kumar (Lect. Eng.), there was scarcity of Teachers when he joined. He managed it very smartly with the help of Primary & Computer Teacher to fulfill the students need. Student enrolment raised from 103 in 2017-18 to 120 in 2018-19, to 156 in 2019-20 and to 171 in session 2020-21.

Rooms in school campus were in poor condition but it was renovated with great efforts of staff and community. School campus was dry & arid but with the help of staff & students campus got transformed in to a lush green one.

There was habit of absence of students from school in beginning months of session but with the help of staff if was managed to start studies form the beginning of the session & achieved the desired results. Now students attend the school from beginning of the session.

Visible Results

- Enhancement in Results.

2017-18	2018-19	2019-20
79.31 %	82.22 %	88.57 %

- Increase in Student count.
- Good Increase in Student Attendance.
- A Big Transformation in School Campus, Now It is a Beautiful Green Campus.
- Two school premises were joined by two interior gates so as to be used fully.

Previous mindset of people was “No atmosphere for learning in Chhapra because of Child Marriage, Alcoholism etc.” Our efforts resulted in over all improvement in school benefits. A good enhancement in result & students count is an outcome of our team effort. A lush green campus is a result of our dedicated efforts along with students.

Further Strategies to Improve

- To Increase Student counts so as to achieve Double Sections in each class.

- To Further Beautify the school campus.
- To Increase awareness against “Child Marriage”.
- To maintain students attendance upto 100%.

Conclusion

We are working towards the upliftment of school & society and we are achieving partial results too. We are further in the mission & will achieve definite results.

Name of School – GHS Ruan (2436)

District – Kurukshetra

Name of Headmistress – Smt. Gursharan Jit Kaur

ABSTRACT

This case study deals with all round development of students and school with collective efforts of school and society. As government schools are running with lack of facilities, the aim is to make the students competent with the smart digitally growing society in order to make them comfortable dealing with the society they will face in the future.

CHALLENGES AND EFFORTS INITIATED

After joining the school, it was shortly realised that the students were very hesitant to express themselves and lacked basic digital skills. WhatsApp groups and new creative ways of doing homework were introduced to help them get comfortable with technology. Several meetings were held with staff to discuss and implement new measures to improve overall development of students and the environment they learnt in.

1. A specific importance was given to student's communication skills by introducing morning assembly performed by students themselves under expert supervision of the dedicated staff. An activity for every day of the week was introduced for student's interaction. Friday was set as the competition day where students participated in various activities like debate, essay writing, painting etc. Saturday was set as sports day and various sports activities were held after recess. Students were treated with utmost care and equality throughout the course of various activities. The teachers were encouraged to discover each child's individual capabilities, skills and talents to choose the right way to guide them to the best version of themselves. More importance was given to practical activities and written work to help better retain the learning. Emphasis was laid on both written and e-learning in Hindi and English equally.
2. An initiative was taken to enhance digital education in school by motivating staff to take active participation in online education. This helped enhance

students' digital literacy. E-learning motivated various students to make educational videos of their practical work which has been uploaded to various streaming platforms like YouTube, Facebook, Twitter etc. Development of more smart rooms were decided after seeing the tremendous potential of students and their eagerness towards this way of learning.

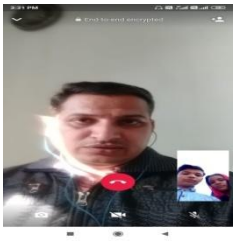

3. Special care was taken of the health department and environment of school. Various clubs like SMC(School Management Committee), timetable, sanitisation, morning assembly yoga, complaint box, daily attendance record, PTM record, funds record and result maintenance were formed. Students and teachers were then sorted in these clubs according to their availability, capabilities and interests. To improve the physical environment of the school, keeping in mind children's safety, a ground (approximately 9000 ft.² with 2.5 ft. depth) was filled and levelled as it had become a breeding ground for snakes and posed a health danger to everyone.

4. To enhance the professional bond between the staff members and involve them in key decision making processes, everyone was treated equally and respectfully regardless of their age, gender, race, caste, religious beliefs, ethnicity or language. Staff was reassured of the full faith that was placed in them by involving them in every decision. They were encouraged to reflect the same values for students and society.

RESULTS

1. Communication with students was increased in order to achieve a level of understanding with them which helped ease them into sharing things more often. There has been a rapid increase in student-teacher interactions. Students are very keen on performing in the morning assembly or in any form of cultural participation. Not only they are no longer hesitant, but they are upfront about what their interests are and proactively participate in them. Student groups are made just to educate villagers about cleanliness and SOP of COVID-19. This has received a huge response. A library group of youth from village and students has been formed and is working together to promote education and awareness towards several important issues. A dedicated

female group from village and school is working on elevating female education in the area. Female students have been rewarded with trophies in debate and slogan writing on block level.

2. Students are now well versed in making videos of their educational assignments and cultural activities to upload them on the school WhatsApp group. Students have turned into active participators rather than passive bystanders.
3. A clean ground area is now maintained in school by filling the 9000 ft.² area which was 2.5 ft. deep with the help of villagers. Construction and repair work is underway with the help of the department grant.
4. For staff, only one restroom was available for both males and females. A separate restroom was built for female staff members. A spacious and neat staff room has also been provided by utilising the space covered by old and useless waste.

FURTHER STRATEGY TO IMPROVE

1. More effort will be made to turn every classroom into a smart classroom given students' huge response to the same.
2. Healthy competition will be encouraged amongst students to promote their overall development.
3. More emphasis will be given on parents' role in their child's education which includes the kind of environment they are being provided at home.
4. Steps will be taken to improve female education for women empowerment.

CONCLUSION

At last, what needs to be said is that 'where there is a will, there is a way'. For better results, there should be a strong will in our hearts and work on our minds. Nothing is impossible as the word itself states 'I-m-Possible'. The motto is to pass the same attitude to the staff, students and society.

Name of School – Aarohi Model Senior Secondary School, Songri

District – Kaithal

Name of Headmistress – Smt. Sunita Ahuja

Introduction

During the lockdown period of the novel corona virus disease, the whole education system has been collapsed. This period requires the essentialities of online teaching-learning in education and how can existing resources of educational institutions effectively transform formal education into online education with the help of virtual classes and other pivotal online tools and hence changing the educational landscape.

Though the concept of virtual classrooms is not new but the current pandemic has forced the entire educational system to adopt this method until we are out of danger from the corona pandemic. In this system the teacher's input and parental involvement must be more than the student's participation. The role of school staff during pandemic in not only to teach students about the study material of their respective classes but to ensure students understand the precautions they should take to protect themselves and others from COVID-19.

Background

Aarohi Schools have been opened in Educationally Backward blocks in Haryana and people from many such this areasare not acquainted to use modern technology. Our school, Aarohi Model School, Songri also teaches students coming from 16 different villages of one such block, Rajound. Before the pandemic, idea of education via online mode would have seemed far-fetched to many of the parents and students. So, it was not just a big challenge for us to normalize the idea, but also a critical responsibility to keep the flow of quality education alive even in these dire times.

All the class teachers were instructed to make contact with the parents and discuss with them about the studies of their ward during lockdown periods. Most of the parents informed that they are not educated and are not able to teach their wards at home.

Key Problems & Issues

After extensive discussions with parents, we were able to figure out the following key problems which we needed to solve to keep teaching the students effectively in COVID-19 times:

- Poor network connectivity
- Less technological awareness
- Lack of access to technology (Like smart phones/computers)
- Shortage of teaching staff

Proposed Solutions

In this unpreceded time of crisis, staff of Aarohi Model School, Songri recognized that a healthy mind lies in a healthy body. So, it was of ample importance to modify our teaching strategies to not only suit the new medium of education but also tokeep our students healthy and their spirits high.

- During lockdown we prepared separate WhatsApp groups of each class. All teaching staff & Principal were the member of each group so that a proper coordination can be maintained.
- Link of NCERT books were sent.
- Students and their parents were educated for the precautions to be taken to avoid spread of COVID-19. They were guided to spread the information.
- Students with no smartphones were given special attention and personal guidance by teachers to continue their studies effectively.
- Shiksha Mitra program was established with members of family or neighbors volunteering to take care of the student's studies.
- Regular staff meetings were organized to discuss new teaching methodologies and improve existing ones.

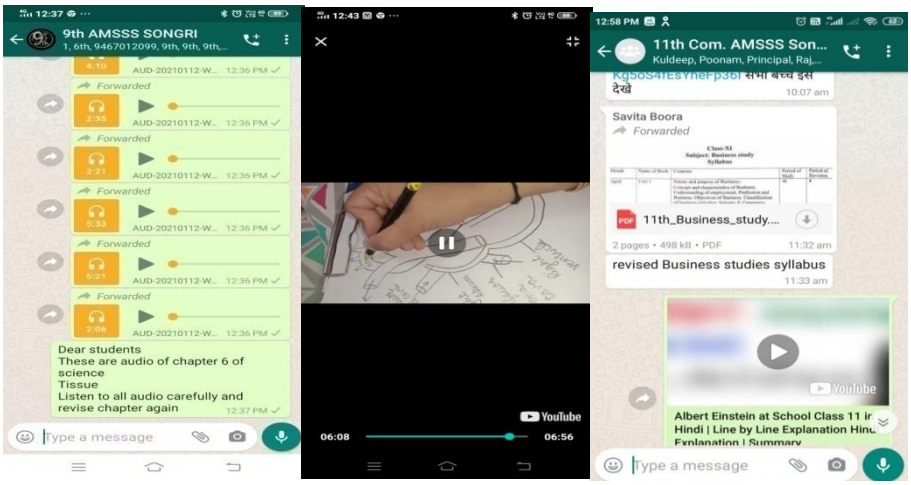

Figure 1: Audio and Video lectures shared in WhatsApp Group

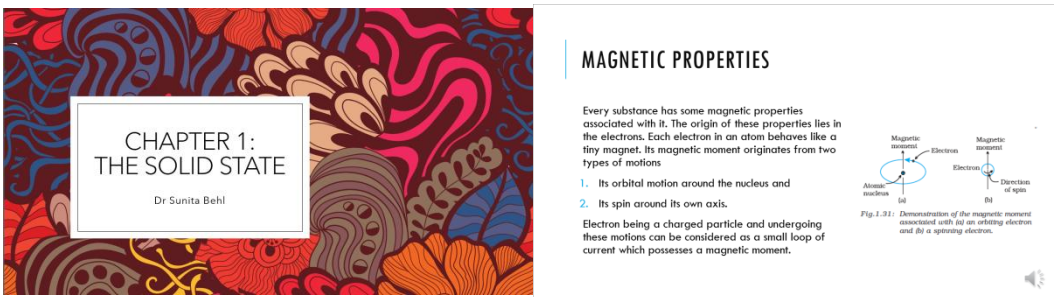

Figure 2: Teachers putting extra efforts to make new audio visual content in form of slides, videos and animation to help students.

- Teachers devised innovative methods to impart education via online modes. Teachers prepared study material in form of Videos, audio and text.
- It was difficult for the students to get acquainted toremote-education strategies. So, teachers adjusted the pace of lectures and started putting extra hours every day to ease out the stress among students.

- Feedback of each student was taken by contacting them on regular basis.
- Each subject teacher checked 5 notebooks daily onWhatsApp&guided each student accordingly.
- Regular tests of students were taken in via Google forms.
- Students were also motivated to take part in all sorts of extra-curricular activities, ranging from essay writing, dance, speech and painting etc.

Name of School – Gmsss, near bus stand Kalanaur

District – Rohtak

Name of Headmistress – Smt. Sunita

Mobile: 9812117533

Case study is a study of person, group or situation over a period of time. Ahead of the institution faces many problems on the part of students. It was found that many students were unaware of equity, equality and various other topics. The main focus was to create awareness among the students. For that purpose different teams are set up and some of the things are achieved which are as follows:-

Community partnership

School development processes have been taking place from time to time for that purpose help from different community and parents is also taken. Mr. I.P.Jain is a social worker from ma skill development center has also contributed a lot for the betterment of the student. They got fresh drinking water as an reverses osmosis is installed with water cooler. In order to protect staff member and student from monkeys a grill is inbuilt with the ramp for safety purpose. In order to overcome the basic need of the poor student honorary person of the city are invited to school from time to time. They motivate the student and help them by providing shoes, uniform, and books. Parents are also motivating regularly so that they can proper take care of their children. Different seminars are also conducted for this purpose.

In order to create a professional awareness among the students visits to different institutes. To keep over environment clean and beautiful over school various plants and trees are planted in the school campus.

As learning organization over school share information with parents in education process. It is done mainly with the members of SMC. The main objective is to promoting team learning and collaboration among all the staff members and the students. Different teams have been made to keep an eye on the developing of the feeling of equality among others. The aim is to ensure that individual is treated fairly and equally. No matter what is their race gender, disability or religion. Clear rules have been set in regard how people should be treated.

The entire staff member and all the students are treated in an equal manner.

Attention is being paid to the needs of students from diverse groups.

For the smooth functioning of the school equality of being fair and impartial has been adopted by all the members.

Mr. Krishna Malik from ARPAN institute was also invited to sensitize the students for differently able students. We must develop a sympathetic attitude toward differently able students.

Various activities are being conducted for the students that they may be able to know how discrimination is carried between boys and girls, about sexual harassment and the discrimination at the level of work done by male and female. Awareness of equality is taught

that all are equal and we must not discriminate on the basis of gender. Girls are no less than boys now a day.

To provide a calm, safe and supportive environment, each process is a valued team member and is made aware that they have the potential to make a positive contribution to school.

Advocate rajbir kashyap is also invitd from time to time to create awareness among the students about the constitution and the gender equality.

He also told the students about the right of children and consumer court.

To develop a sense of pride among the students, the success of the students is cellbrated students are also rewarded from the aluminis.

In order to support the students in class room, each and every vhlp is provide by the staff and administrator for their all round development. We still are helpful that more effort will be put in for the all round and proffesionaldevelopment of student in future

I wish we will be able to overcome our weakness too with the collaborations of staff, parents and the other community members.